Davi Bhajan Mukhtawala

Kashi prasad

Atma Ram Sharma

Kashi

1918

॥ श्रीः ॥

देवी भजन मुक्तावली

(भजनों का एक अपूर्व ग्रंथ)

गोलोक वासी

श्रीकाशीप्रसाद विरचित ।

जिसे

काशी निवासी-

बाबू चंद्रिकाप्रसाद श्रीवास्तव ने

प्रकाशित किया ।

मैनेजर पं० आत्माराम शर्मा द्वारा
जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव काशी में मुद्रित हुई ।

प्रथमबार १०००] १९१८ [मूल्य ॥)

समर्पण ।

श्रीकमला के अति कृपहि, सन्मुख आयो आज ।
देवी भजन मुक्तावली, लिये करन मो साज ॥१॥
हे भक्तन समुदाय मम, करौ दण्डवत तोंहि ।
ग्रंथ लिये मैं ठाढ़ हूं, तेरे सन्मुख सोहिं ॥२॥
हे हे कमला भक्त हे, कृपा धारि उर माहिं ।
देवि भजन मुक्तावली, करौं समर्पित तोहिं ॥३॥
आशा जन स्वीकृत करहि, देहिं बड़ाई मान ।
दोष न गनिहैं भक्त जन, देवि भजन यहि जान ॥४॥

शुद्धाशुद्ध पत्र ।

अशुद्ध	शुद्ध	पत्र	पंक्ति
दोव	देवी	३	७
विस्तणि	विस्तराणि	६	८
मोकद	मोदक	७	८
साजरे	सजरे	१३	१०
मुनि	सुनि	१५	६
जाइ	जाई	१७	१२
क्यों	क्यों	२०	९
त्रिभुन	त्रिभुवन	२१	४
रकसुर	रंकसुर	२२	१०
सुरात	सुराते	२३	१०
दर्वी	देवी	,,	११
थिनै	विनय	२५	,,
ज	जे	२७	६
सुधमृत	सुधामृत	,,	७
भज	भजे	,,	११
पदुम्म	पदुम	,,	१४
बूडन	बूड़न की	३५	१
पंचाम्रित	पंचामृत	३७	८
गागारी	गागरी	४१	,,
पगारी	पागरी	४४	४
टाढ़े	ठाढ़े	,,	४

अशुद्ध	शुद्ध	पत्र	पंक्ती
गधरव	गंधर्व	४५	३
भाख	भाल	४६	८
हुरमा	रमा	४७	१०
स्वाममि	स्वामिनी	,,	१४
जलक	अलक	४८	१२
सुधूंघर	सुघूंघर	,,	१३
स्त्रिष्टि	सृष्टि	५३	१०
हरि	हारे	,,	१३
भैरा	भयरी	५५	२
रामा	रमा	५६	११
केहि	कहिं	५७	,,
भजन को	भजन देवी को	६५	१
अवरि	अब कि	६६	३
सजम	संजम	६७	५
इह	इहै	,,	६
जो सुनिमेख	निमेष	,,	९
रितु	ऋतु	६८	१०
नसावनि	नसावति	६९	१५
कञ्जल	कज्जल	७०	१२
उहरिया	डहारिया	७२	३
घरणाई	नरणई	७४	१५
चरनन का	चरणन को	७५	१६
रितु	ऋतु	७७	१
त्रिपुड	त्रिपुंड	७८	५
कौशिल	काशी में	८२	१४

अशुद्ध	शुद्ध	पत्र	पंक्ती
चनि	चितवनि	८८	६
टीका	टीको	९०	४
झवारि	गिझवारि	९४	६
ठहरते	ठहरें	९५	५
उधरिनी	उधारिनो	,,	८
हमारी	हमारो	९६	१
रागी	रासी	१०२	१
गवानाही	गंवाना नहीं	१०५	१६
वेसुमार	बे शुमार	१०६	५
शव	सब	१२०	१
निकंदन	निकंदनि	१२१	१
छीर	क्षीर	१२२	११
अव	भव	१२४	९
सिन्धु	सिन्धु	,,	,,
तै	ते	१२६	७
विभातस	विभात	१२७	१५
नाल	सनाल	,,	,,
दिढ़ाई	दृढ़ाई	१३१	९
ह	हे	१३३	५
चितै	चित	१३७	१२
सेउ	सेवै	१३९	५
जोहि	जाहि	१४३	७
भिन्न गुन	भिन्न गुन	१५०	१३

—०—

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीकमलाजीकी आरती ।
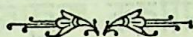
जै कमले हरिललने जै त्रिभुवन जननी जै जै त्रिभुवन जननी जै जै सुरमुनिपालिनि जै संकट हरनी जै देवि जै देवि १ जै जग-कारनि माये सगुणे गुण रहिते जै सगुणे गुण रहिते जै बैकुठ विहारिणि नारायण सहिते जै जै देवि जै देवि २ जै मणिद्वीप विलासिनि जै महिमा अमिते जै जै महिमा अमिते हरिहृत्क-मल विकाशिनि विधि शंकर नमिते जै देवि जै देवि ३ श्री कमला शिर मुकुट विराजित नाशापुट मोती श्री नाशापुट मोती कोटि वालर वि दिपित मनहुँ श्री मुख जोती जै देवि जै देवि ४ रमा जुगल कर कमल विराजत अति सुन्दर बिराजित अति सुन्दर ललित सरोरुह युगल अभ-

यबर जन सुखकर जै देवि जै देवि ५ शिव ब्रह्मा-
दिक मिलि सुर गण अस्तुति गावैं अस्तुति गावैं
आरति करति उमादिक अतुलित छवि पावैं जै
देवि जै देवि ६ चारिहुँ वेद चहूँ दिशि श्री महिमा
बरनै भगवती महिमा बरनै इन्द्रादिक सुरमुनि
गन सेवहि जुग चरनैं जै देवि जै देवि ॥७॥
जासु कृपालहि मुक्ति सकल जीवन काशी
आरति गावउँ तासु ब्रह्म जो अविनाशी जै देवि
जै देवि ॥८॥१॥

श्री भुवनेश्वरी महारानी की आरती ।

जै मणि दीप निवासिनि जै भुवनेशानी
जै जै सुरनर पालनि जै जै रुद्रानी जै देवि
जै देवि १ जै पाशांकुश धारिनी अभिमत वर-
दानी जै अभिमत वरदानी जै जै भव भय
हरनी जै जै महरानी जै देवि जै देवि २ अरुण
कमल छवि सोहत मुख पंकज जोती श्री मुख

पंकज जोती मणि भूषन अँग राजित नाशा पुट मोती जै देवि जै देवि ॥ ३ ॥ मणि मंडप मधि रतन सिंघासन अतिसुन्दर सिंघासन अति सुन्दर शिवाकार बरमंच विराजत जन सुखकर जै देवि जै देवि ॥ ४ ॥ पाद जासु विधि हरि हर अरु ईश्वर विधि हरिहर अरु ईश्वर फलक सदा शिव बने आपुताके ऊपर जै देवि जै देवि ॥ ५ ॥ तासु मंच पर बैठी भगवति भुव-नेशी श्री भगवति भुवनेशी आरति करति विबु-ध तिय शारद देवेशी जै देवि जै देवि ॥ ६ ॥ जै जै भक्त उधारिनि देवी गुनराशी जगदम्बा गुणराशी ॥ मांगत श्री पद भक्ति चरन सेवक काशी जै देवि जै देवि ॥७॥२॥

रागकान्हरा ॥१॥

भगवति चरन भजो मेरे भाई ॥ १ ॥ सुन्दर ललित बरन पंकज छबि नख जो-तिन

रविकोटि लजाई ॥ २ ॥ ऊरध रेख कुलिश धुज अंकुश अमल कमल जव परम सुहाई ॥ ३ ॥ ब्रह्मादिक सेवित चरनन की महिमा अमित बरनि नाहि जाई ॥ ४ ॥ विबुध मुकुट मणि गण प्रतिबिंबित श्रीपद दुति अतुलित अधिकाई ॥ ५ ॥ इन्द्रादिक सुर भजि जा पद को पाये निज पद वर प्रभुताई ॥ ६ ॥ सुरथ भूप आराधि जाहि रिपु जी-तिलई निजराज बढ़ाई ॥ ७ ॥ जो पद पदुम भजन प्रताप लहि वैश्य समाधि ज्ञान निपुनाई ॥ ८ ॥ पाइ परम गति मंगल भूपति तिहूंलोक कीरतिहि बढ़ाई ॥ ९ ॥ भुक्ति मुक्ति धन धाम राज सुत धरम परम यश भूति भलाई ॥ १० ॥ अभिमत फल पावे नर निति भजि जननि चरन संतन सुखदाई ॥ ११ ॥ हरिहर विधि रवि सुर गनना यक पूजि अनेक जनम सिधिपाई ॥ १२ ॥

काशी भजिये भगवती पद पंकज जाहि सकल सुर सीस नवाई ॥१३॥३॥

रागमल्लार ॥१॥

मेरे मन देवि मूरति वसी ॥ १ ॥ सुमिरि रूप अनूप जाको अविद्या तम नसी ॥ २ ॥ सीस माणिक मुकुट राजित उर वसी ॥ ३ ॥ श्रवन मणिताटंक सोहत भालवेंदी लसी ॥४॥ जुगल पग मंजीर शोभित किंकिनी कटि कसी ॥ ५ ॥ यश बखानत सकल मुनिगन सहस आठ अरु असी ॥ ६ ॥ ध्यान शंकर करत जाको सेइ वारानसी ॥ ७ ॥ मेनका करिनृत्य गावत अप्सरा उरवसी ॥ ८ ॥ कोउ चहत बर धाम धन कोउ होन चाहत यशी ॥ ९ ॥ चहत कमला भक्ति काशी सेइ वारानसी ॥१०॥४॥

रागकेदारा ।

भजुमन देवि भव भय हरणि ॥ १ ॥

कोटि चन्द्र समान शीतल प्रभा अति सुख करणि ॥ २ ॥ जोति अंग विभाति अद्भुत मनहु कोटिन तरणि ॥ ३ ॥ आदि शक्ति प्रताप अतुलित को सकै तिहि वरणि ॥ ४ ॥ जासु पदरज जानि महिमा हरि लिये शिर धरणि ॥ ५ ॥ जयति छीर समुद्र तनया जयति माधव घरणि ॥६॥ भक्त केहित धारि बपु लीला ललित विस्तरणि ॥ जयति जयति त्रिदेव जननी जयति उतपाति करणि ॥ जयति जग पालनि भवानी जयति जग संघरणि ॥ शंख चक्र गदा सहित कर कमल पंकज धरणि ॥ देहु निज पद भक्ति काशिहि पाहि अशरण शरणि ॥५॥

राग कान्हरा ।

ध्यान करो गनपति जननी को ॥ दामिनि दुतितन तेज विराजत बसन ललित भूषन सुठिनीको ॥ अरध चन्द्र चूडामणि

सोहत भाल विशाल जटित मणि टीको ॥ वेसर लसत नासिका सुन्दर मुख छवि लखि पूरन शशि फीको ॥ अधर विंव विद्रुम दुति शोभित दशन हसत जनु कुन्द कली को ॥ कनक लता समगात मनोहर उपमा कहि न जात त्रिबलीको ॥ मुक्ताहार नाभि सर राजित लज्जित करत हंस अवली को ॥ मातु गोद गज बदन विराजत जननी खवावत मोकद घी को ॥ छवि निधान शिव श्वेत जलद निभ सँग सोहत गिरिराज लली को ॥ जोरी अभि-मत फलदा सुरतरु काशी के हिय धाम थली को ॥ निरखि वारि तन मन वा छवि पर भजहु सदा शिव पारवती को ॥६॥

राग कान्हरा ॥

सेइये कमला पद पंकज ॥ जासु पदार विन्द निशि वासर ध्यावत सुरपति विधि शंकर

अज ॥ जाके भाल लिखीलिपि विधि की परम दरिद्र लखो यह अचरज ॥ भजि कमला पद भयेउ भूप मणि लहेउ सैन्य वाजिनर रथगज ॥ ध्यान किये श्री चरनरेख शुभ अंकुश कमल कुलिश ऊरध ध्वज ॥ नाशत सकल पाप ताप दुख होत परम मंगल वधाव वज ॥ योगी साधि सकल इन्द्रिन को ध्यान करताहिय जो पद अंबुज ॥ काशी त्यागि सकल जंजालहि अभिमत फल दायक श्री पद भज ॥७॥

राग केदारा ।

करु मन अम्बिका पद ध्यान ॥ प्रात जो पद पदुम ध्यावत जन लहत कल्यान ॥ परम शुभ दायक सुरासुर सेव्य रूप निधान ॥ जाहि चरन सरोज छवि ब्रह्मादिदेव प्रधान ॥ भजत अति अनुराग निशि दिन चंचरीक समान ॥ अरुण वरण हरण सकल दुख दीनता अज्ञान ॥ सेइ

ब्रह्मा नन्द रसको लहत संत सुजान ॥ उरध रेख सुकमल धुज अंकुश कुलिश सुखखान ॥ मिटत सुमिरत मूढता तम फुरत हिय विज्ञान ॥ विनय काशी करत जननी देहु यह वरदान ॥ वसै तब पद भक्ति मोहिय होय निर्मल ज्ञान ॥८॥

करु मन अंबिका पद प्रीति ॥ इन्द्रियन के विषय पागे तजि भजन की रीति ॥ अंत को पछताइ है जब आयु जैहै बीति ॥ जगत रचना चारि दिन को बालु की जनु भीति ॥ ताहि लखि मति भूल प्यारे मानिकै परतीति ॥ शरण गहि जगदंब को तब छूटि है भवभीति ॥ आदि शक्ति सरोज पद भजु त्यागि सकल अजीति ॥ पाइहै निर्वान काशी सेइ परम पुनीति ॥९॥

करु मन अम्बिका पद प्रेम ॥ जाहि सुर

मुनि भजत अनुदिन गहि अचल दृढ़ नेम ॥
जोति रूप अनूप हिय में मनहुँ दीपक टेम ॥
जोगि ध्यान लगाइ देखत लहहिं परम सुछेम ॥
दिपित जासु स्वरूप सुंदर मनहु तपित सुहेम ॥
भजत काशी जाहि शंकर धारि अबिचल
नेम ॥१०॥

राग केदारा ।

शोभित रमा रमा पति जोरी ॥ दहिने
हरि तन श्याम जलद छवि वामरमा दामिनि
दुति गोरी ॥ जलधि सुतातन कनक बसन
सुठि श्री पति ओढ़े पीत पिछोरी । नारायण
शिर मुकुट जड़ित मणि रमा सीस चन्द्रिका
लसोरी ॥ हरि उर वन माला की शोभा
कमला उर उर वसी वसोरी ॥ केशर खौरि
लसत माधव शिर लछिमी भाल सिंदूर दियोरी
कुंडल मकरा कृत हरि कानन करन फूल श्रुति

सिन्धु किशोरी ॥ युगल किशोर रूप छवि बरनत शारद नारद मति भइ भोरी ॥ वेद पुरान बखानत थाके महिमा वरनि सकै कवि कोरी ॥ दंपति मुख छवि नैन विलोकत पूरन शशि जनु जुगल चकोरी ॥ काशी प्रसाद पाइ शुभ अवसर चरन भक्ति वर मांगि लियो री ॥११॥

रागसारंग ।

सजनी यह गिरि कुवरि अहेरी ॥ लखि दारुन तप अचल सुताकर बन किरात तिय सकल कहेरी ॥ इनहिं प्रनाम करहिं सुर मुनिवर जग जननी चहुँ बेद कहेरी ॥ शिव विवाहहित गहेउ कठिन ब्रत तजि अहार दुख दुसह सहेरी जाहि सदा योगी हिय ध्यावत नाम लेत गति जीव लहेरी ॥ सो सुरकाज हेतु जन पालिनि निराहार दिन रैन रहेरी ॥ सखि मैं सांच कहति सुनि मुनि ते चलि गौरी पद कमल गहेरी ॥

कंद मूल फल फूल भेट धरि अभिमत फल को आजु लहैरी ॥ धन यह भूमि परम पावनि शुचि जगदम्बा जहँ आपु रहैरी ॥ काशी सब सुर मुनि सेवत पद भजि भगवति शुभ भक्ति चहैरी ॥१२॥

राग

त्रिभुवन जननी के बलिजैहों ॥ अब श्री कमला पद पंकज कहँ तजि न कहूँ चलि जैहों अभिमत फल आराधे औरहि श्री पद विमुख न पैहों ॥ मन अति चंचल चपल ताहि अब देवी भजन सिखैहों ॥ अपर कथा कानन नहिं सुनिहौं और नाम नाहि लैहों ॥ नैन निरखि जगदम्बा मुख छबि मातुहि सीस नवैहों ॥ अपर त्यागि सब प्रीति जगत की मा पद नेह लगैहों ॥ काशी सकल चराचर जननी ताको मै दास कहैहों ॥१३॥

राग

हे मन जगदम्बा पद भजरे ॥ जाहि भजे उत्तम गति पावत नर अंडज उष मजेरे ॥ ब्रह्मा बिरचत सकल जगत को पाइ जासु पद रजेरे ॥ पाइ मनुज तन वृथा न खोवै आलस कहँ अब तजेरे ॥ अर्थादिक चारिहु फल दाता देवी चरण पंकजरे ॥ ताहि विसारि विषय लपटाने जो सेवत शिव अजरे ॥ अरुण कमल छवि तरुण तरणि दुति लसत कमल जब ध्वजरे ॥ काशी सेइ भजिये कमला पद भक्ति साजको साजरे ॥१४॥

राग

भजहु चरण श्री जग जननी को वीतत काल बृथा मेरे प्यारे ॥ तजि सब विषय विहार कुटिलता मानि परम हित बचन हमारे ॥ अपनी रहनि विचारु हिये महँ काहे जननी

पद पदुम विसारे ॥ जगदम्बा त्रिभुवन की माता ताहि भजो निति सांझ सकारे ॥ जापदर-जलहि जग बिरचत अज धरणी शेष सहस शिर धारे ॥ प्रलय काल शिव अंग लगावत भस्म वनाय जगत कों सारे ॥ नहिं गति देवी चरन भजन विनु वेद शास्त्र मुनि गुनि निरवारे ॥ काशी प्रसाद भजत निशि वासर पाहि मातु मैं शरण तिहारे ॥१५॥

राग

जग की जननी भव भय हरनी विनती इतनी सुनिये मेरी ॥ सत्र संकठ ताप हरो मेरो करिये करुणा तजिये देरी ॥ मन मेरो मतंग नाहि मानै ममता मद माति रह्यो एरी ॥ अंकुश धर रावरेपाय जुगल कवताहि स्ववश करिहैं घेरी ॥ सुनि श्रवन सुयश शरणागत को शरन-नमैआई पडेउँ तेरी ॥ जननी को

सुभाव विदित जग में सुत को अपराध नहीं हेरी ॥ माया मोहि अतिहि सताय रही जा को नाम अविद्या तुव चेरी ॥ काशी परसाद पुकार करै काटिये जननी माया वेरी ॥१६॥

श्रीकमलाहरि प्रिया जी के जनम की बधाई ॥ मंगल ॥ मुनि कमलाजी को जनम जगत आनँद भयो ॥ अखिल चतुर्दश भुवन परम मंगल छयो ॥ धनि वह कार्तिक माँस शरद शोभालसी धनि उजियारो पाख धन्य वहद्वादसी ॥ अरुणोदय के समय प्रगट भई मातु जब ॥ हरखि विबुध गन कनक सुमन झरि लायउ तब ॥ मिलि सुर वनिता वृन्द सुमंगल गावहीं ॥ जनम सुफल निज लखि परम सुख पावही अरुण कमल आसीन रमा छवि सोहई ॥ सुरमुनि असुर चराचर कर मन मोहई चारि भुजा युगकमल अभय वर सुंदर, अमृत

कलश गहि चारि अन्हावत करिवर ॥ रतन जड़ित शिर मुकुट प्रभा अति भावई ॥ श्रवन युगल ताटंक अमित छबि पावई ॥ नासावेसर ललित भाल वेंदीलसी ॥ चूरी सुभग चहूं कर कठि किंकिनकसी ॥ लखि मुख कमल प्रकाश कोटि रवि लाजई ॥ नृत्य करत गंधर्व अपछ-रागावहीं ॥ परम मुदित दुंदुभी सुरेश बजावही परमानंद मगन नारायण मनहिमन ॥ रूप अनूप निहार वारि तन आपन ॥ जयजय धुनि सुर असुर समाज उचारहीं ॥ उमा सची बानी आरती उतारहीं ॥ सिंधुराय अति हरखि निछा-वर बांटहीं ॥ दैमानि भूषन रतन जगत को पाटहीं नाचत साहित समाज महेश हरष भरे ॥ सोहत परम विचित्र हाथ डमरू धरे ॥ पढ़ि श्रीसूक्ति पवित्र वेद अस्तुति करे ॥ जाहि पढे दुख मि-टत सकल पातक हरें ॥ काशी जो यह मंगल

हरखित गावहीं ॥ इछा फल जगजननि कृपा सब पावहीं ॥ १७ ॥

पुनःजनम मंगल श्रीहरि बलभाजीको राग ।

आजु श्री सिन्धुराज गृह मंगल बजत वधाई ॥ अखिल चराचर त्रिभुवन स्वामिनि आपु प्रगटि जह आई ॥ गावत मंगल सुरवनिता सब कमला जनम वधाई ॥ नृत्य करत गंधर्व अपछरा मुदित परमहरखाई ॥ सिंधु राज आ-नंद उमगि मन नाना रतन लुटाई ॥ परमा-नन्द धाइ सुरलूटत देह दसा विसराई ॥ हरखि देव दुंदुभी वजावत गगन सुमन झरिलाई ॥ सुजस वखानत वेद चहु दिसि जैजै कार मचाई ॥ कम-लासनी सिंधु तनया को रूप वरनि नहि जाइ ॥ प्रभा कोटि शशि तेज कोटिरवि काम कोटछबि छाई ॥ अमल कमल कर जुगल विराजत जुग वर अभय सुहाई ॥ चारि भुजा चारिहु फलदाता

भक्तन के सुखदाई ॥ चारि कोन चारि गज सुन्दर अमृत कलश-अन्ह वाई ॥ हरि निजव क्षस्थल मंह धारे हरि वल्ल-भाकहाई ॥ काशि प्रसाद रमाचरनन भजि भक्ति विमलवर पाई॥१८॥

पुनः श्री सिंधु किशोरी कमला
जनम वधाई राग कान्हरा ॥

जनम लियो श्री आदि भवानी ॥ मथन होत ही छीर सिन्धु के प्रगट भई कमला महरानी ॥ पद्मासन बैठी सुठि सुन्दरि रूप राशि शोभा गुण खानी ॥ आरति करति सकल सुर वनिता उमा सची धनदा ब्रम्हानी ॥ हरषि बिबुध दुंदु-भी बजावत कहत सकल जै हरि पटरानी ॥ सुरपति फूलन की झरलाई अस्तुति करत वेद वरवानी ॥ सिन्धु-राय गज वाजि रतन सब हरषि लुटावत मंगल ठानी ॥ चार भुजा युग कमल अभय वरछबि अपार नहिं जात वखानी ॥

परम हरष हरि रमा रूप लखि जीवन जनम सफल करि मानी ॥ तुरित धनद निज इष्ट देवि लखि रतन जडित भूषन सब आनी ॥ पहिरावत हरिप्रेम विवश है लखि मोहित भगवति मुसुकानी ॥ आदि जोति ब्रह्मादिक जननी भक्ति हेतु हरि हाथ बिकानी ॥ कियो धाम हरि वछस्थल मंह जाकह ध्यान कराहिं मुनिज्ञानी॥ जगदम्बा की अतुलित महिमा अन्तन विधिहरि शंकर जानी ॥ काशि प्रशाद आश करु पूरन विनती करत जोरि जुग पानी ॥११॥

राग।

मेरी माति देवि भजन की प्यासी ॥ सुरपति हरि हर धनद चतुरमुख सब सुर शक्ति उपासी ॥ मायाधीन चराचर जेते देवि तुही अविनासी ॥ सारे जगत को मोहि लइ है माया जो है तेरी दासी सुरनर मुनि सब माया के बस जोगी

जती सन्यासी ॥ उलठे जग वेवहार देखि कै आवत है मोहि हांसी ॥ मायेश्वरि पद भजन विनानर कैसे छुटैभव फांसी ॥ माया स्वामिनि त्रिभुवन जननी सकल जगत उर वासी ॥ श्री पद विमुख नहीं उत्तमगति क्या मथुरा क्या कासी ॥२०॥

राग ।

जननि पद काहेन भजन करो ॥ वेद पुरान बतावत बहु बिधि तुम नहिं ध्यान धरो ॥ देवि भजन बिनु मुक्ति न पैहो क्यों भव वन्ध परो ॥ जबगुरदेव ज्ञान अंजन दियो क्यों भव कूप गिरो ॥ जनम लहेउ तुम लख चौरासी अबहु न पेट भरो ॥ जीवन मुक्त देवि पद शेवक ताहि सदा सुमिरो ॥ काशि प्रसाद भजो कमला पद ताहिन अब विसरो ॥२१॥

दिवाने मन क्या जग भरमिरहे ॥ जग-

दवा को सुमिरन तजि के क्यों दुखदुसह सहे ॥
सिन्धुसुता पद नावत्यागि के क्यों भव सिन्धु वहे
वेद पुरान बखानत महिमा मुनि गन सकल
कहे ॥ त्रिभुन स्वामिनिचरन भजन विनु
कोउ न मुक्ति लहे ॥ भगवति भजन सुधा
रस चाखे तापन कोई रहे श्रीकमलापद पदुम-
भक्ति विनु काशीन और चहे ॥ २२ ॥

देविपद काहे न प्रीति किये ॥ त्याग भग-
वति भक्ति सुधामृत मदिरा काहे को पिये ॥
जिह्वा के वश जीव वधत है दायान तनिक
हिये ॥ स्वाद विवस खल सुनत नहीं कछु
क्या तुम सों कहिये ॥ जोजग जननी भक्ति
चहो तुम हिंसा अवसि तजिये ॥ दया धरम
गहि भगवति के पद भजन सदा करिये ॥ विष-
इन के उपदेश अहित अतिताहि नही सुनिये
जे नर अधम विमुख जननी पदते जग काहे

को जिये ॥ काशिप्रसाद सदा भगवति को प्रीति सहित भजिये ॥ २३ ॥

पुनः ॥ समुझि मनगाफिल नहि रहिये ॥ मिथ्या जग वे वहार ताहि गाहि काहे को दुख सहिये ॥ जगदंवापद भजन निरन्तर प्रेम सहित करिये ॥ स्वास वान सम तन तरकसते जात विचारु हिये ॥ काल ग्रसत छन छन तोहि मूरख जगजननी भजिये हरि हर विधि से-वित कमला पद शरणागत गहिये ॥ श्रीपद विमुख रंकसुर नरमुनि ताहि नहीं तजिये ॥ काशी सेई भजिये देवी पद चारिहु फल लहिये ॥ २४ ॥

पुनः ॥ जननि विनु सुत दुख कवन हरै ॥ जो उपजाई सदा प्रतिपालति अहित कबहुं न करे ॥ छमाकरति अपराध हजारन अवगुन चित न धरै ॥ अन्त अमरपद देति

ताहि पुनि जो नहि सेइ मैरे ॥ पान कराइ छीर बालक को नितहि उदरभैरे ॥ जगदम्बा पद भजन बिना नर कोई न काज सैरे ॥ काय वचन मन देविचरन सुधि कबहुं नहीं बिसैरे काशी प्रसाद जलधि तनया भजि भव सागर-हितैरे ॥ २५ ॥

जगत में काहे को जनम लिया ॥ ब्रह्मा दिक सेवित देवीपद सुमिरन त्यागि दिया ॥ माति रहे मद मोह सुरात भक्ति सुधान पियो इन्द्रादिक सुरनारदादि मुनि देवी भजनहि कियो ताहि न भजहु परम मूरख नरकाहे को वृथा जियो ॥ काशि प्रसाद महालछि मिपद भजन सदा करियो ॥ २६ ॥

मोसाफिर जागि सचेत रहो । अगम पंथ मति सो बहु गाफिल जो निजधाम चहो ॥ ठग अनेक तेरे संग लागे जिन कहँ मित्र कहो

रतन अमोल स्वासत वप्यारे लूटे लेत अहो ॥ सेइ चरन करि भजन देविको को नहि सुगतिल-हो ॥ काशीप्रसाद त्यागि सब आशा कमला शरन गहो ॥ २७॥

दिवाने नर क्या जग पागि रहे । सुत धन धाम काम मोह मै अति अनुरागी रहे ॥ ए सब बैरी मित्र बने है स्वारथ लागि रहे । गफ-लत मैं तेरी आयु सिरानी अबहुं न जागि रहे ॥ जगदम्बा चरनन ते मूरख काहे को भागि रहे । काशिप्रसाद भजो कमला पद बहु दिन त्या-गि रहे ॥ २८ ॥

हेमन अबहुं न होत ठेकाने । लड़िकाई तो खेलि गंवाये तरुनौ रहे भुलाने ॥ अजहुं न प्रीति करी भगवति पद दिन दिन जात बुढाने जगदंवा को दाश कहावत अचल नेम नहि ठाने ॥ बृथा कहा जग बंचत मूरख प्रीति रीति

नाहि जाने । जिन कह अपनो करि तूजाने सो तब सबहि बिगाने ॥ अखिलेश्वरि जननी तजि औरहि हित नहि कहत सयाने । देव अनेक जौन जेहि भावत तासु अराधन ठाने ॥ काशिप्रसाद मातु कमला बिनु अपर नही मन आने ॥ २९ ॥

जग मै अधम नहीं कोई मोसो ॥ जगदम्बा त्रिभुवन की पालिनी भजन हेतु मोहि पोसो ॥ ताहि विसारि विषय लपटानो करत नही अपसोसो ॥ सुनु मन मूरख अजहुं चेत करु कहउ विनै कारितोसो ॥ विषय गरलमाति पान करै अबपरिहरि अमिय परोसों ॥ काहुको बिभव पराक्रमको वल काहू विवेक भरोसो ॥ काशी प्रशाद मातु कमला सनितेरोइ मोहिभरो सो ॥ ३० ॥

क्या मन मूढ बिषय मदमाते त्यागत नाहि

देह अभिमाना ॥ निज सुख बिसरि सहतनाना दुख जग रचना मंह भरमि भुलाना ॥ बाला पन तौ खेलि बिताये तरुनाइ में लहेउ न ज्ञाना ॥ बिषय भोग मंह आयु सिरानी वृद्ध भये तब क्या पछताना ॥ अखिल बिश्वस चराचर जहलगि जो जड़ चेतन जीव जहाना ॥ ब्रह्मशक्ति ब्यापी सब घट में मूरख ताहि नहीं पहिचाना ॥ होय सचेत भजहु देवी पद क्या जानै कब होय पयाना ॥ जो पै अबासि त्यागि के जग को बृथा मोह में क्या लपटाना ॥ जलधि सुताजुग चर-न सरोरुह भवतरिवे कहं दृढ़ जल याना ॥ काशि प्रसाद ताहि गहिये अबजाहि भजे पावै निर्वाना ॥ ३१ ॥

क्या मन मूरख भयेउ दिवाना जगर-चना मंह भरमि भुलाना ॥ खानपान भोगनिद्रा वश आदि शक्ति पद प्रेम न ठाना ॥ समुझि

बिचारि त्यागु चंचलता शास्त्र प्रमान बुद्धि अ-
नुमाना ॥ दवी भजन बिनु मुक्ति न होई गावत
सुरमुनि वेद पुराना ॥ सुरथ सुदर्शन नृप सुवाहु
वरदेवी भजन कर महिमा जाना ॥ शक्ति अरा-
धि लहे इछा फल मुनि गनजाको सुजस बखा-
ना ॥ जे जगदंबा चरन कमल तजि भजहिं
अनेक देव विधि नाना ॥ त्यागि सुधमृत पिय-
त कूपजल रस बिशेष स्वाद नहि जाना ॥ सोई
पंडित सोइ परम विवेकी सोइ ज्ञानी सोइ परम
सयाना ॥ जो त्रिभुवन जननी पद सेवक मन
क्रम बचन भजे नाहिं आना ॥ बिधि हरिहर कुबेर
गण नायक अतुल प्रभाव जासु नहि जाना ॥
काशी को मन चंचरीक अब श्री कमला पद
पदुम्म लुभाना ॥ ३२ ॥

राग मलार ।

देवी जी के दोउ नैना रतनारे ॥ सकल

चराचर स्वामी माधव तिनके मोह निहारे ॥ पाये विधि शंकर वर प्रभुता जासु कटाक्ष निहारे ॥ सुर पति धनद धारि ब्रत अविचल सेवत सांझ सकारे ॥ महिमा अमित बखानत जाके शेष गनेशहु हारे ॥ मुनि गन वेद पुरान बांचि जेहि ब्रह्म जोति निरवारे ॥ जासु कृपा लहि काशी शंकर कोटिन अधम उधारे ॥ ताहि भजों त्रिभुवन जननी को सेवक जाहि पियारे ॥३३॥

मल्लार ।

मोहि यह बरखा अतिमनभाई ॥ नारायण तन श्याम मेघ दुति चपला रमा सुहाई ॥ मोती माल लसत दंपति उर वग पांती छबि पाई ॥ सुर मुनिगन जो बरनत महिमा जनु दादुर रटलाई ॥ नील कंठ रव नील कंट शिव अस्तुति बहुविधि गाई ॥ छबि अपार सोई सुर सरिता बाढ़ी पावस पाई ॥ सिन्धु सुता हरि

रूप सिन्धु दोउ तिनहिं मिलन जनुधाई ॥ हरि प्यारी जलधर स्वाती बिनु अपर सबहिं विसराई ॥ काशी चित चात्रिकमुद पावत श्री पद ध्यान लगाई ॥३४॥

राग सोरठ ।

मातु कमला की बलिहारी ॥ जग सिरजति पालति पुनि नाशति पलक निमेष मझारी ॥ भजिये ताहि सदा निशिवासर सेवत जाहि मुरारी ॥ अपर जीव की कवन चलावै महिमा अमित बिचारी ॥ जाके वश त्रिभुवन को स्वामी श्री वैकुंठ बिहारी ॥ उदित भानु दुति मुख पंकज छबि परम सुभग भुजचारी ॥ युग कमल विमल अति सुन्दर युग कर बर भय हारी ॥ चारिश्वेत गज अन्हवावत सुठि अमृत कलश कर धारी सुरवनिता मिलि परम मुदित चित आरति लेति उतारी ॥ रूप अनूप अलौ-

क्कि शोभा वरनत शारद हारी ॥ ध्यान करत हिय में निति काशी श्रीशंकर त्रिपुरारी ॥ ३५ ॥

राग बिहाग ।

हे मन रोगी कुपथहि त्याग ॥ जो सतगुरु तुव वैद बतावत केवल तबहित लाग ॥ मानि परम हित धारहु प्यारे संजम विषय विराग ॥ सेवहु भवरुज नाशक चूरन श्रीपद पदुम पराग हरन सकल दुख त्रिविध ताप को देवि चरन अनुराग । विषय मिठाई तोहि अहित बहु तामें कबहु न पाग ॥ ब्रह्मानन्द सुधारस पैहै छूटत ही भवराग ॥ गावहु श्रवन सुखद देवी पद सुन्दर राग विहाग ॥ काशी अमिय मूरि जो पायो सो रोगी बडभाग ॥ ३६ ॥

राग भैरव ।

प्रात समै द्वारे सुर टेरत जागिये कमला माई ॥ टेक॥ उठिये मातु त्रिभुवन की पालिनि

विनवहिं सुर समुदाई ॥ विधिहरि शंकर सुजस बखानत तब चरनन मनलाई ॥ वेद करत अस्तुति कर जोरे नाना भांति सुहाई ॥ मागध वंदी गन यशवरनत रुचिर सुमंगल गाईं ॥ सुनत कोलाहल भगवति जागी उठी लेत जमुहाई ॥ रतनारे दृग कछु अलसाने लखि मृग वाल लजाई ॥ चारि भुजा जुग कमल अभय वर भक्तन हिय सुखदाई ॥ चरन कमल अति सुभग ललित जनु छबि सरिता बढियाई ॥ काशि प्रसाद निरखि वा छबि को बारबार बलिजाई ॥ ३७ ॥

प्राती राग विलास ।

भोर भयो जागहु जग जननी ॥ त्रिविधतापदुःख संकट हरनी॥ महिमा जासु जगत विख्याता सुरनर मुनि त्रिभुवन की माता ॥ जापद पदुम अखिल भय हारी ॥ सेवत अति अनुराग मुरारी ॥ ताहि

वंदि विनवत सुर स्वामी ॥ जागिये मातु नमामि नमामी ॥ विधि हरि शंकर धनदहुतासा ॥ राखहिं तव चरनन की आसा ॥ तजि निद्रा सुनि विनय हमारी ॥ उठिये मातु सुर मुनिहित कारी ॥ सुनत शब्द जागी महरानी ॥ रूप सिंधु शोभा गुनखानी ॥ आरति करत परम हरखानी सुरतिय गावत मधुरसुबानी ॥ निरखि रमा पद पंकज शोभा ॥ काशी चंचरीक मन लोभा ॥ ३८ ॥

प्रात भजन रागेरामौसिरी ।

जननी जागु अब भयो भोर ॥ मंद छवि उडगन गगन भये करत तमचुर शोर ॥ द्वार सुरमुनि सुजस गावत शब्द अति घन घोर ॥ गुनअपार न जाय वरनो मोरि मति अति थोर ॥ गात प्रात विभात रविछवि रुचिर भौंह मरोर ॥ विनय काशी करत अति अनुराग जुग करजोर ॥ हरहु सब दुख मोहि प्रति दिन मातु आशा तोर ॥ ३९ ॥

उमिरिया तैं काहे को गवावत रे हे मन निपट गवार ॥ बाल जुवा दोऊ पन बीते ढोवत जग को भार ॥ अंग सिथिल भये आई बुढाई अजहुँ न चेतत यार ॥ गरभ मांहि बहु भांति किये तुम देवी भजन करार ॥ आवत ही जग में सब बिसरे भजे न एकौ बार ॥ चारिहु वेद पुरान बखानत मुनिगन कीन विचार ॥ कलियुग तप ब्रत नहिं बनि आवत देवी भजन अधार ॥ जनमत मरत बहुत दिन बीते कीने पाप अपार ॥ भजन किये नहिं जगदम्बा को लीने जनम हजार ॥ बहुत दिना तुम वृथा बिताये तजे न जग बेवहार ॥ काशी सेई भजो देवी पद अब मतिकाज बिगार ॥४०॥

पार अब कैसे को जैहै रे नदिया अगम अपार ॥ गहिरी नदिया नाव पुरानी खेवनहार गंवार ॥ निशि अंधियारी सोइ मतवारो जाके हाथ

पतवार ॥ यह संसार नदी अपार मँह बूडत तैं मझधार॥ भगवति चरन जहाज त्याग कै और न कोउ अधार ॥ काम क्रोध मोह घोर बहु मछ मगर घरियार ॥ सिन्धु सुता जग मातु बिना अब कोउ न बचावनि हार ॥ जग मँह अधम पतित खल जेते मैं तिन मँह सरदार ॥ अधम उधारनि काशी देवि बिनु कौन करै भव पार ॥ ४१ ॥

विषय माहि तेरी बीती उमिरिया किये न देवि पद प्रीति हो ॥ माया विवसतै कछुक न जाने देवी भजन की रीति हो ॥ बाला पन को खेलि गवाये तरुनाई तिय प्रीति हो ॥ वृद्ध भये पर क्या पछताने गई आयु जब बीति हो ॥ खान पान में रहत लुभानो इन्द्री लिये नहि जीति हो ॥ सुने न श्रवन सुखद अति पावनि देवी कथा पुनीति हो ॥ घोर अथाह महा भव

सागर बूडन जह भीति हो ॥ सिन्धु सुतापद दृढ़ तरनीगहु जहां नहीं कोइ ईति हो ॥ जग दम्बा पद प्रीतसुधारहु त्यागहु सकल अनीति हो ॥ काशी सेई भजहु जग जननी राखि हिये परतीति हो ॥ ४२ ॥

भोगत विषय बहुत दिन बीते तजे न जग बेवहार हो ॥ बीति जाति तेरी सारी उमिरिया सोचत नाहिं गंवार हो ॥ माया रचित जगत को सागर सूझत वार न पार हो ॥ सिन्धु सुता पद कमल पोत बिनु और न कोइ अधार हो ॥ जनम जनम तेरी सब विधि बिगरी अजहु न लेत सुधार हो ॥ चिन्ता मणि नरतन लहि निज कर काहे गवावत यारहो ॥ जनमे योनि लाख चौरासी सीस लिये अघ भार हो ॥ काशी भजहु त्रिभुवन जननी को तजि संसार बिहार हो ॥ ४३ ॥

श्री जगदम्बा का चौसठ उपचार का पूजन ।

राग खमाइच ॥

पूजन जगजननी को करो री ॥ प्रथम ध्यान करि जगदम्बा को रतन सिंघासन आनि धरो-री ॥ स्वागत कुशल पूछि देवी को निरखि जुगल पद ताप हरोरी दूर्वा सरसिज बिष्णु क्रांत युत पाद्य-देइ श्रम दूरि करोरी ।। गंध फूल जवसरसो दूर्वातिल कुश अक्षत मिश्रित रोरी ॥तीनि अर्घ्य दै मातु करा-म्बुज आचमनीय विधान रचोरी ॥ जाती फूल कंकोल लौंग युत गंध सलिल को शुद्ध करोरी ॥ स्वधा उचारि आचमन श्री मुख तीनि बार दै मोद लहोरी ॥ सघृत दही मधुपर्क हेतु लै शहत सहित धरि कनक कटोरी ॥ स्वधा उचारि मातु कर पंकज मधुपर्कहि अति प्रीति धरोरी ॥ पुनि आचमन तीनि दै मातुहिंरतन पादुका धरि सुठि जोरी ॥ पंच घोष युत मातु संग है स्नान

मंदिर आगमन करोरी ॥ स्नान वस्त्र दै कनक पीठ धरि दतुवन हेतु कपूर धरोरी ॥ मुख धोवाई वारह कंडूषन देइ परम आनन्द लहोरी ॥ मुख प्रछालि आचमन दैके पोछि मुखांबुज शुद्ध करोरी ॥ करि अभ्यंग द्रव्य की रचना जननी अंग अभ्यंग करोरी ॥ केश शोधि श्री अंग उवटि के उष्णोदक करि कलश भरोरी ॥ पंचा म्रित फलादि वस्तु तै स्नान बिधान अनेक रचोरी मंत्र स्नान उशीर कुसुम युत गंगा जल में रत नहि बेरि ॥ कनकामृत के सहित मंत्र पढि मंत्र स्नान विधान करोरी ॥ मुख दै तीनि आ-चमन मातुहि केश अंग सुठि पोंछ बहोरी ॥ जुगल वसन रविबाल वरण को पहिरा बहु बहु भांति निहोरी ॥ मंत्र सहित आचमन तीनि दै कनक रचित उपवीत धरोरी ॥ धरि पादुका मातु चरन नहित विनती करहु उभय करजोरी ॥ बाजत

बाजन जगदम्बा संग भूषन मंदिर मुदित चलोरी ॥ तहँ आसन बैठारि मातुको अंग अंग अति रुचिर सजोरी ॥ नखसिख भूषन सुठि सँवारिकै रतन पादुका आनि धरोरी ॥ बजत शंख घंटादि वाद्य सब याग स्थानागमन करोरी ॥ रतन सिंघासन हेम पीठ पर जगदंबा स्थान रचोरी ॥ अंगरागहित मृगमद चन्दन केशर अगर सुगंध भरोरी ॥ कपय कपूर कचूर सुरचित जटामांसि संग मिश्रित रोरी ॥ रुचिर सुधारि कनक भोजन महँ अलक निवारि सुतिलक रचोरी ॥ अंग अंग सुगंध रचित करि दृग अंजन माथे शुभरोरी ॥ भालसिंदूर बिन्दु रचि सुन्दर केसर खौरि बिचित्र लसोरी ॥ अक्षत मुक्ता रतन सुतंडुल यव मिश्रित सुगंध महबोरी करि अरपन त्रिभुवन जननी को सुमन माल निर्मान करोरी ॥ अमल कमल चंपक गुलाब

अरु जपा वकुल अति वास भरोरी ॥ पारि-
जात शत पत्र मल्लिका दाडिभ कुंद सुमाल
रचोरी ॥ गुहि अति रुचिर सुमन माला को
मातुहि पहिरावहु कर जोरी ॥ धूप दीप पाद्य
अचमन पुनि दै नैवेद्य विधान करोरी ॥ सूप
पूप पापड बहु पूरी मोदक माखन रुचिर
कचोरी पंचामृत दधि दूध मलाई घेवर पायस
मधुर पकोरी ॥ षटरस भोजन बिविध भांति
कै सुधास्वाद पकवान धरोरी ॥ अमृत बनाइ
मंत्र मुद्रा सो सादर जग मातुहि अरपोरी ॥
करि बिनती बहु ध्यान मातु को गंगा जल
शुचि कनक कटोरी ॥ शीतल सुवास पियाइ
देविको उष्णोदक निर्मान करोरी ॥ कर धोवाइ
उवटाइ गंध सोगंध कंडूषन विधान विरचोरी ॥
पाद्याचमन देइ मातु को देहु रुचिर पुंगी फल
तोरी ॥ गरी बदाम छोहाडा किसमिस मधुर

दाखवर पात्र रचोरी ॥ पनसरसाल कसेरू जामुन वीजापूर खजूर बहोरी ॥ नार नारंगी श्रीफल नाना भांति सप्रीति बटोरी ॥ जगदंबा को अरपि प्रेम सो मुदित चारिफल आजु लहोरी ॥ ऐला केशर लवंग जाति फल खैर संग कंकोल करोरी ॥ विरचहु रुचिर पान को बीडा कस्तूरी कर्पूर भरोरी ॥ जग जननी को खवाइ प्रीति सो कनक दक्षिणा आनि धरोरी ॥ करि प्रदक्षिणा तीनि मातु को पुष्पांजलि दै पाप हरोरी ॥ करहु प्रणाम प्रणत पालिनी को विविध विनय दोऊ करजोरी ॥ कनक छत्र दै चवर ढुरावहु व्यजन आति प्रीति करोरी ॥ गीत वाद्य नृत्य नाना विधि जगमातु हि सरवस अरपोरी ॥ करि पूजा चौसठ प्रकार को विविध भांति बहुवार निहोरी ॥ काशी

भजि भगवति पदपंकज भुक्ति मुक्ति दोउ हाथ लहोरी ॥ ४४ ॥

॥ राग होरी ॥

कमला खेलति ललित फागरी ॥ सिन्धु सुतातन वसन अबीरी हरि शिर सोहत अरुण पागरी ॥ इत सुरगन नारायन के सँग जलधि सुता सँग सखीरी नागरी ॥ देवमृदंग सितार बजावत सुरवानिता गावत सुरागरी ॥ माधव हाथ कनक पिचुकारी कमला केकर हेमगागारी ॥ कमला सैनदई सखियन को हरिहि सुरंग अन्हवाई भागरी ॥ आजु दिवस आनंद मंगल को लाज सकोचहि देहु त्यागरी ॥ हँसते दौरि डारो रंगहरि पर लगो है पिताम्बर अरुण दागरी ॥ हरि प्यारी दंपति की शोभा जे निरखे ताको बड़ो भागरी ॥ सुरमुनि जाहि भजति पावत धारि नेम व्रत जोग यागरी ॥ रमारमापति चरन भजनमँह काशी के मन परम रागरी ४५

॥ होरी ॥

कमला हरि होरी मचाई ॥ इतते आये है नारायन प्रभुसिन्धु सुता उत आई ॥ खेलत फाग परम आनंद भरि शोभा बरनि न जाई ॥ सकल सुरगन मुद पाई ॥ हरि सँग विधिहर सुरपति दिन कर लसत देव समुदाई ॥ उमाशची वानी बनिता कमला संग सोहाई ॥ सकल सुरतिय जुरि आई ॥ बाजत वेनु मृदंग ताल डफ बीना अरु सहनाई उडत गुलाल कुमकुमा अबरख केशर रंग बनाई ॥ मधुर धुनि होरी गाई ॥ हरि कर कमल कनक पिचुकारी लियेउ परम हरखाई ॥ हेमकलश लिये सिंधु किशोरी केशर रंग भराई ॥ दियो हरिको अन्हवाई ॥ कमला सैन दिये सखियन को हरि को पकरि ले आई ॥ साजि सिंगार सुठि नवल बधू को शिरपर चुनरि ओढाई ॥ नाथजी को नाच नचाई

रमारमापति हरखित खेलत होरी को साज सजाई निरखि ललित छबि हरि प्यारी की काशी मुदित बलिजाई ॥ मनहु चारिहु फलपाई ॥ ४६ ॥

॥ होरी ॥

खेलहु भरि अनुराग आजुत्रिभुवन जननी संग होरि हो ॥ नेम धरम ब्रत संजम जपतप सखा समाज बटोरी हो ॥ असुवानि भरिनयनन पिचुकारी प्रीति को रंग निचोरी हो ॥ अन्हवावहु श्रीसिन्धु लली कहँ लोक लाज त्रिनतोरी हो ॥ बाजन सुभग बजावहु अनहद प्रेम अबीर के झोरी हो ॥ पहिरि भक्ति को वसन ललित छबि प्रेम रंगमँह वोरी हो ॥ बसहु निरन्तर मेरे हिय मैं छीर समुद्र किशोरी हो काशी जगदम्बा सो प्रति दिन विनय करत कर जोरी हो ॥ ४७ ॥

॥ होरी ॥

तजि जग को वेबहार सकल करु देवि चरन

अनुरागरी ॥ दयाशील सज्जनता गहि हिय कपट कुटिलता त्यागरी ॥ सिरजत विधि संसार अखिल लहि जा पदपदुम परागरी ॥ पहिरहु बसन ललित सुनेम को धारि धरम शिर पगारी ॥ जगदम्बा कहँ भजहु निरन्तर लहि जग विषय बिरागरी ॥ जलधि सुता पद प्रीति रंगो मन गावत सुन्दर फागरी ॥ देहु कृपाकरि भक्ति चरन को काशी इहै वर मांगरी ॥ ४८ ॥

॥ प्राती राग भैरव ॥

प्रात समै सुर टेरि जगावत जागहु जलधि कुमारी ॥ उठहु मातु त्रिभुवनकी स्वामिनि शरणागत भयहारी ॥ सुनत शब्द जागी महरानी नयन सरोज उघारी ॥ जैजैकार मचावत सुरगन जै देवन हितकारी ॥ पानदान लिये निजकर पंकज श्रीवैकुंठ विहारी ॥ विधि ठाढेसित चँवर ढुरावत छत्रगहे त्रिपुरारी ॥ मागधबंदी सुजस

बखानत महिमा वेद उचारी ॥ सुरवनिता आ-
रती उतारति साजि कनक की थारी ॥ नाचत
मिलि गंधरब अपछरा गान करत सुरनारी ॥
काशि विलोकि प्रात माकी छबि हरखि जात
बलिहारी ॥ ४१ ॥

॥ राग कल्यान ॥

जै जै भव भीति हरनि अखिल विघन
तिमिर तरनि मंगल मुदकरनि जयति त्रिपुर सुं-
दरी ॥ सुरपति हरि बिधि महेश वरुण धनद
रविगनेश सेवहि तव चरन कमल मातु शांकरी ॥
महिमा अतुलित अनन्त वेदहु पायेन अंतगा-
वहिं निति सुयश संत दिवस सरवरी ॥ रूपराशि
छबि अपार वरदा अति सै उदार सेवक प्रति
पालि देवि सकल अघहरी ॥ सीस मुकुट श्रवन
जुगल शोभित ताटंक बिमल गलेहार मुकता
वलिलसत सतलरी ॥ कंकल केयूर ललित सोहै

कर कमल मांहि रतन जड़ित चूरी छबि देति अतिहरी ॥ काशी करजोरि बिनती करत त्रिपुरभवानि कमलापद भक्ति मोहि देहु सुखकरी ॥ ५० ॥

॥ राग यल्यान ॥

जै जै जग जननि मातु सुरनर मुनि अखिल त्रातु संकट दुख हरनि जौति जौति कालिके ॥ रसना सुललित विशाल मनहु तरनि प्रातकाल भाख इन्दु वालत्सत मुंड मालिके ॥ कृपा न मुंड धारिनी मशान थल विहारिनी सुरारिदल संघारिनी जै जै कपालिके ॥ जै त्रिपुर दैत्य मार्दिनी जै अंबिके कपर्दिनी जै जै निशुंभशुंभ रक्त बीज घालिके ॥ चंड मुंड नाशिनी सदा शिवांक वासिनी सुबुद्धिं की प्रकाशिनी गिरिश बालिके ॥ कमलापद अचल प्रीति दीजै जननी पुनीति काशी तब शरण माहि प्रणत पालिके ॥५१॥

॥ आरती काली जी की ॥

जै जै जै जग जननी जै दाछिन काली तुव पदपकंज से बहि विधिहर वनमाली ॥ जै जै जै दुख हरनी जै असुरनघाली ॥ शवशिव हिदय बिराजति मधुते मतवाली ॥ जो निज वल्ली उपजाइ सृष्टि सगरी पाली ॥ श्यामा पूरन कामा कर खप्परवाली ॥ कोटि वाल रवि-निंद जिह्वा की लाली ॥ करति मशान विहार संग कोटिन आली ॥ नाचति योगिनि मुदित देत भैरव ताली ॥ आरति करति विबुधतिय गहि कंचन थाली ॥ काशी हिदेहु हुरमा पद भक्ति सुगति शाली ॥ ५२॥

प्रात समैं श्री जग जननी को सुरपति विधि हरि ईश जगावैं ॥ उठिये मातु त्रिभुवन की स्वामनी सुरगन ठाढे महिमा गावैं ॥ माग धवंदी गन मिलि द्वारे जगदम्बा को सुयश

सुनावैं ॥ सुनत उठी त्रिभुवन की पालिनी सुर मुनि जै जै कार मचावैं ॥ जागि रम्मा बैठी सिंघासन कनक कलश करिवर अन्हवावैं ॥ आरति करति बिबुधतिय सुन्दरि गावति गीत परम मुद पावे ॥ लहँहि परम गति मुनि जेहि जांचत सकल ताप अघ पुंज नसावैं ॥ जेनर सेईं मातु काशी कँह जगदंबा पद प्रीति द्रिढ़ावैं ॥ ५३ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

सोहति हरि सँग सिंधु किशोरी ॥ सुन्दर सुभग मनोहर जोरी ॥ तडित प्रभातमृद मंजुल गाता ॥ जग पालिनि त्रिभुवन की माता ॥ ललित जुगल लोचन रतनारे ॥ कार जलक सुघूंघर वारे ॥ केहार कटि सुठिपीन नितंबा ॥ कोमल अधर लाल जनुबिंबा ॥ अखिल भुवन चौदह की कारिनि ॥ आदि शक्ति वैकुंठ विहा-

रिनि ॥ असुर दलनि दानव कुल नाशिनी नारायन हिय धाम निवासिनि ॥ सुरमुनि महिमा वरनत हारे ॥ ब्रह्मरूपिनी मुनिन विचारे उपमा ढूंढि रहे कवि हारी ॥ किमि पटतरिये समुद्र कुमारी जासु प्रभाव वेद नहिं जाना ॥ तासु रूप किमिजाय बखाना ॥ देहु भक्ति निज जलधि कुमारी ॥ काशी प्रसाद जात बलिहारी ॥ ५४ ॥

॥ भैरवी ॥

मैया मोरी अब कैसे लाज रही ॥ महा मोहजार बड़ पापीसो मेरी बांह गही ॥ अगम पंथ कोई संग न साथी चिन्ता परम लही ॥ अगुन अनाम पिया प्यारे की विरह न जात सही ॥ पूछि थकी मैं पिय की खबरिया अब लों न काहू कही ॥ निशि अंधियारी सँगलागे ठग लूटे लेत नितही ॥ बेगि पुकारो काशी देवि को राखि है लाज सही ॥ ५५ ॥

॥ भैरवी ॥

कमला तोहि परी मैं पैयां ॥ मैं बालक अजान तुव पोसो नितहिं करौं लडिकैयां ॥ तुव तजि अपरन मोहिं भरोसो जानत याहि गुसैयां ॥ नहिं गिनाहि अपराध हमारे जैस गगन जुन्हैयां ॥ इन्द्री चंचल जीभ चटोरी विषयन मांहि लुभैयां ॥ जदपि बाल मातुहि नहिं मानत करत बहुत मचलैया ॥ सुतहि कबहु नहिं त्यागति माता लै निज गोद २ कन्हैयां ॥ जोग तपस्या नेम धरम ब्रत जाने मेरी बलैयां ॥ केवल काशी सेइ देवि पद ताही सो प्रीति लगैयां ॥ ५६ ॥

॥ राग कल्याण ॥

बरनौंगन रूप ललित मातु इंदिराके ॥ आदि शक्ति रूप रास माधव उर जासुबास अखिल जगत शृष्ठिलय निमिष विलास-जाके ॥ सोहति जोरी अनूप सुन्दर अतु-

लित स्वरूप श्याम मेघलस तसंग मानहु चप-
लाके ॥ नूपुर छबि सुठि बिभाति पद नखद्युति
जगमगाति कोटिन्ह रबिबाल लजाहिं निरखत
तरवाके ॥ जंघाकदली के खंभ पीन शुभग
जुग नितंब किंकिनी बिलसति सुरुचिर
छीन कटि रमा के ॥ त्रिबली तिहु तापहरनि
नाभी अति मोद करनि जुग कुच जनु कनक
कलश ब्रह्म सुख सुधाके ॥ बिकशित मुख मनहु
कंजु नैन चंचरीक मंजु अलकावलि तनु सेवार
शोभा सरिताके ॥ भूषन भूषित सुअंगला
जहिं लखि बहु अनंग दीपीत मुख की उदो
तिजोतिचंद्रिकाके ॥ तपित हेम सदृश प्रभा
कांति कोटि चन्द्र कलातेजपुंज निंदक जनु
कोटिन्ह सविताके ॥ गनपति यम वरुन शेष
अनिल अनल शशि धनेश सुरपति विधि हरि
महेश सेवक पद माके ॥ दीजै वर विमल माय

सुर मुनि हित नित सहाय काशी हिय वसहि चरन पंकज कमलाके ॥ ५७ ॥

राग भैरवी ।

मोहि देवी भजन मन भावतरे ॥ योगी साधि सकल इन्द्रिन जेहि हृदय कमल मँह ध्यावतरे ॥ मुनि गण वेद पुरान बांचि जेहि ब्रह्म रूप ठहरावतरे ॥ सकल सुरासुर जाहि भजाहि निति विधि हरि हर शिर नावतरे ॥ आदि शक्ति त्रिभुवन को जननी जो जग को उपजावतरे ॥ पाइ जासु पद रज को ब्रह्मा अवि-कल स्रिष्टि वनावतरे ॥ सेससमुझि महिमा सहस्र शिर को भार उटावतरे ॥ प्रलय काल करि भस्म रुद्र निज अंग बिभूति लगावतरे ॥ कविमुनिम हिमावरनत हरि वेदहु पारन पावतरे ॥ काशील हतसव जीब मुक्ति को बहुरि नही जग आवतरे ॥ ५८ ॥

मोहि सिन्धु सुता छवि भावतरे ॥ निरखत रूप अनूप जासु नर ब्रह्मानन्द हि पावतरे ॥ चारि भुजा जुग कमल अभय वरसेवक्र ताप नसावतरे ॥ कमलासन आसीन रमाजी को करिवर चारि अन्हावतरे ॥ वेसर सुटिना सिका भाल मह सेंदुर विन्दु सुहावतरे ॥ अरुन कमल छबि मुख की शोभा नैन भवर हि लुभावतरे ॥ जगमगात रतनन के भूषन कोटिन तरनि लजावतरे ॥ जासु चरन पंकज निशिवासर विधि शंकर हरि ध्यावतरे ॥का शी भजहु कमला पद पंकज काहे को जनम गंवावतरे ॥ ५१ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

श्री गौरी महारानी के जनम की वधाई ॥ जनम लियो गिरी राजकिशोरी ॥ निर्मल ग्रीष मरितु शुचिपावन जेठ मास तिथि चौथ अंजो-

री ॥ आदि जोति सचराचर जननी भक्ति हेतु अवतार लियोरी ॥ गावत किन्नर नाचत अपसरा रूप राशि सुन्दरि तन गोरी ॥ आरति करति विबुध तिय हरखित साजि फूल फल नरियर रोरी ॥ मंगल गावति मोद बढ़ावति करति निछावर ललित पिछोरी ॥ महाराज गिरिराज हरखभरि रतन लुटावत भरि भरि झोरी ॥ लूटत जाचक भये अजाचक शोभा वरनि सकै कविकोरी ॥ वालरूप त्रिभुवन जननी सो विनती इहै करौं करजोरी ॥ काशी रमा पद पंकज महँनिति भवर समान वसै मति मोरी ॥ ६० ॥

॥ भैरवी ॥

मैया मोही भक्ति आपनी देरी ॥ टेक ॥ श्रवन सुजस सुनि तोहि ढिग आयो राखि आपनो केरी ॥ सुत अव गुन चित धरति न जननी अनुचित सबहि सहेरी ॥ जौ जग जननी नाम तिहारो

तो मम शोक हरैरी ॥ बसै सदा हिय ध्यान रमाको हरन सकल भव भैरी ॥ उरध जुगल कर कमल विराजत जुगवर दान अभैरी ॥ जदपि मोहि खल अधम अपावन जग के लोग कहैरी ॥ जो जगदम्बा मोहि अपनावै परम सुजसहि लहैरी ॥ एहि कलि काल कठिन सब साधन तपब्रत योग अहैरी ॥ काशी सेइ मातु कमला को श्रीपद भक्ति चहैरी ॥ ६१ ॥

॥ घाटो ॥

भजले कमला के चरनवा ॥ तजि जग बेवहार मोरे हरमा ॥ कैसे मैं बखानों महिमा देवी चरित अपार मोरे हरमा ॥ निशिदिन देवी को अराधहु ॥ जेहिसेवै करतार मोरे हरमा काशी भजिहु मुक्तिहि पैहै देवी चरित उदार मेरे हरमा ॥ ६२ ॥ देवी जीको कैसे कै पावों । गैली डहरि भुलाय मोरे हरमा ॥ मग जोहत बहुदिन

बीते । कोउ दै न लखाय मोरे हेरमा ॥ जगमें हेरत अब थाकेउं । गैली पेडुरी पिराय मोरे हेरमा ॥ सतगुर के जाउ बलिहारी । मोहि देहैं बताय मोरे हेरमा ॥ काशी सेइ रमा गुन गावहु जग सोच विहाय मोरे हेरमा ॥ ६२ ॥

॥ पुनः ॥

मोरे मन निशिदिन भावै । कमलाजी को ध्यान मोरे हेरमा ॥ नैनन काजरकी शोभा मुख मृदु मुसुकान मोरे हेरमा ॥ माथे रतन किरीट विराजत । गले मोतिन के हार मोरे हेरमा ॥ कुंडल मकराकृत कानन ॥ वेदी लसति ली लार मोरे हेरामा ॥ भुज चार अभै वर सुन्दर । कर जुगल सरोज मोरे हेरमा ॥ रविकोटि तेजलखिलाजै । अंग देखि मनोज मोरे हेरमा करिवर सित चारि अन्हावै ॥ मधुरामृत धार मोरे हेरमा ॥ काशी निरखत कमला छबि । पावैमोद अपार मोरे हेरमा ॥ ६३ ॥

पुनः

विनती कमला जीसो मेरी सुनिये चितलाय मोरें हेरमा ॥ जगमैं बहुत दुख पायों । विषयन लपटाय मोरे हेरमा ॥ जनमेंउ मैं लख चौरासी । तेरो चरन विहाय मोरे हेरमा ॥ कीने अपराध हजारन ॥ जो गने न गनाय मोरे हेरमा ॥ काशी तब शरनै आयो । पालिये जग माय मोरे हेरमा ॥ ६४ ॥

पुनः ।

ऐहो पथिक सुनि लीजो । तोहि कहउं बुझाय मोरे हेरमा ॥ गाफिल नहिं सोवै मुसाफिर । खटके की सराय मोरे हेरमा ॥ तेरे कर रतनअजूवा । केहि दैन गंवाय मोरे हेरमा ॥ तेरे संग बहुत ठग लागे । झूठी प्रीति देखाय मोरे हेरमा ॥ मग चलत बहुत दिन बीते । गई डहरी हेराय मोरे हेरमा । तेरो कोई नहिं साथी । दुख

मै न सहाय मोरे हेरमा ॥ सतगुरुजन बाट लखावै पहुंचे घर जाय मोरे हेरमा ॥ काशी भजु सिंधु सुता को । जग प्रीति विहाय मोरे हेरमा ॥ ६५॥

॥ ठुमरी ॥

बीति गई तेरी सारी उमरिया ॥ बहुत दिना पर नरतन पाये गान किये नहिं देवि हुनरिया ॥ अबलों कमला सुधि नहिं पायउं पुछि थकेउं जननीकि खबरिया ॥ निशि अंधियारी पंथ न सूझत देवी मिलन की हेरानी डहरिया ॥ सत गुरुज्ञान दीप जौं बारहिं सूझि परै मग मिटई अंधरिया ॥ कीट पतंगउ मुक्ति लहत जहं गति दाइनि मेरी काशी नगरिया ॥ ६६ ॥

राग मल्हार ॥

मेरो मन देवि भजे सुख पावत ॥ जासु शक्ति लहि विधि जग सिरजत पालक हरिहु कहावत ॥ तासु पाई बल प्रलय काल शिव

अखिल विश्व विनशावत ॥ अतुलित जासु प्रभाव विदित जग महिमा सुर मुनि गावत ॥ चारिहु वेद नेति कहि बरणत शक्ति ब्रह्म ठहरावत ॥ परा शक्ति अव्यय अविनाशिनि जाहि त्रिदेवहु ध्यावत ॥ अधम उधारन हित सोई जननी काशी मुक्ति लुटावत ॥६७॥

पुनः ।

बहुरि यह अवसर मिलिहै नांहि ॥ मूरख लख चौरासी भरमत बहु दिन बीते जाहिं ॥ पाये अब नर तन चिंतामणि अजहुँ सुधारत नाहि अखिल विश्व सुर मुनि जड़ चेतन जहँ लगि जगत लखाहि ॥ प्रकृति सनातनि ब्रह्म शक्ति जो व्यापि रही सब मांहि ॥ विधि हरिहर सुरगन निशिवासर ध्यान करत हैं जाहि ॥ जगदम्बा त्रिभुवन की जननी मूढ़ विसारत वाहि ॥ सिंधुसुता कहँ भक्ति पियारी सुरमुनि

जाहि सराहि ॥ काशी भजु कमलापद पंकज प्रीति प्रतीति निवाहि ॥ ६८ ॥

दिवाने मन श्री पद क्यों विसरे ॥ यह जग द्विपिन काम दावानल जीव अनेक जरे ॥ कृपा वृष्टि करि जाहि बचावति भगवती ते उबरे ॥ विषय भोग लपटाय जीव जग माया बंध परे ॥ जग दम्बा पद कमल भजन विनु कबहुँ न काहु तरे ॥ अपर देव जगदीश्वर परिहरि नाहिं भव भीति हरे ॥ काशी सेइ भजे देवी जे बहुरि न जनम धरे ॥६९॥

भजो मन देवी चरन अभिराम ॥ अंतकाल कोउ संग न जैहैं धन संपति सुत बाम ॥ सोचि विचारि भजहु कमला पद भवभय हर सुखधाम जो तन देइ सदा प्रतिपालति भगवति सिंधु ललाम ॥ अपर देव आराधे से चित लहत नाहिं विश्राम ॥ काशी प्रसाद दास कमला को औरन सो नहिं काम ॥ ७० ॥

भजो मन देवी चरन सुख दाता ॥ परा शक्तिसुर मुनि की कारण अखिल चराचर माता ॥ अमित प्रभाव चरित्र अलौकिक जासु जगत विख्याता ॥ अपर देव की कौन चलावै सेवत जाहि विधाता ॥ भजिये ताहि मातु कमलाको महिमा प्रगट विभाता ॥ ध्यावत जाहि निरन्तर निशिदिन शंकर हरि सुरत्राता ॥ काशी प्रसाद भजत निशिवासर कमलापद जल जाता ॥७१॥

जननि विनु सुत दुख मेटै कौन ॥ जगदंबा त्रिभुवन की माता आदि शक्ति है जौन ॥ लै औतार सदा भय नाशति सुरनर मुनि के तौन ॥ कोइ संग तेरें नहि जैहै सुत दारा धन भौन ॥ अंत काल तन कँह परिहरि जवनि सारिजाय है पौन ॥ साधन सकल कठिन कलि युग मँह तप व्रत संजम मौन ॥ काशि देवि पद सेवन विनु नहि छूटत आवागौन ॥७२॥

जननी बिनु कवन हरे सुत पीर ।। जो जन्माइ सदा प्रतिपालति पान करावत छीर ।। सो जग जननी चरन भजन विनु कैसे मिटै भवभीर ।। जबते माया जीव पगन महँ डारेउ करम जंजीर निकसन चहत जात अरुझानो विवस धरत नहिं धीर ।। तृष्णा वस सोई आपु बंधानो जैसे मरकट कीर ।। काशी हरि प्यारी आराधे बहुरि न लहत शरीर ।। ७२ ।।

कोउ इतनी कहो कमला जी सो जाय ।। जबते तव पद कमल त्यागि रहेउ विषय लपटाय कल नहिं पड़त सहत नाना दुख निज सुधि गयउ भुलाय ।। एहि कलिकाल कठिन सब साधन सुगम न और उपाय ।। मिटइ सकल दुख जौ करुणा करि मातु लेई अपनाय ।। अति दुस्तर भवसागर तरिबो कमला भजन विहाय ।। काशी सेई भजहु हरि बनिता जो

त्रिभुवन की माय ॥ ७४ ॥

कवन तोरि गति होई हो गये यम के सदन में ॥ किये न दे--विपद प्रीति हो भूले विषयन में ॥ निति बीतति तोरि आयु हो प्रति दिन छनछन में ॥ जगदंबा पद नेह हो धारे नहिं मन में ॥ ठगन वनाये धाम हो मूरख तेरे मन में ॥ विषय संग दुख मूल हो सुख दे विभजन में ॥ कलियुग सिधि नहिं होय हो तपो ब्रत साधन में ॥ काशी समान अपर नहिं हो गतिदा त्रिभुवन में ॥७५॥

कजरी खेलति जहं हरि ललना । जलधि सुता संग माधव भूलत ॥ सुरतिय हरखि भुलावै पलना । हरि कमला छवि जबते निहारेउ देखे बिनु छनहु पड़त कलना ॥ सांची प्रीति करहु देवी पद । देवीजी को भावत कपट छलना ॥ देवी दरशन बिनु नींद न आवति ॥ अखियन

कबहु पड़त पलना । मुक्ति हेतु माहि मंडल ढूंढेउ ॥ काशी सम सुखद अपर थलना ॥७६॥

देखो कजरी खेलति हरिकी रनिया । घन गरजत चपला बहु चमकत ॥ झूमकि झूमकि बरसत पनिया । हरि पीताम्बर काछनि काछे॥ गरे मोतिन के हार विच विचमनिया ॥ सिंधु सुता मृदुगात मनोहर । लाली चुनरी छबीली अति छबिबनिया । तीरथ जग मंह जदापि हजारन । काशी सम कोउ नहिं सारी दुनिया ॥७७॥

पुनः ।

देखो देखोरी हिंडोला झूलैं सिंधु लली ॥ मुख पंकज छबि नासा सुन्दर दशन लसत जनु कुंद कली ॥ रतन जड़ित शिर कीट विराजत नागिनी मनहुं अलक अवली ॥ नाभी सर शोभामृत पूरित वरनि न जाय सुभग त्रिबली ॥ मणिमय खंभ पाट की डोरी । हरखि

हिंडोलन झूलावहि अली । काशी सेई भजन को ॥ भव तरिवे को उपाय भली ॥७८॥

पुनः ।

कमला हरि आजु मचाई कजरी ॥ सुरगन सकल विष्णु संग सोहत । लछिमी संग सुर तिय सगरी ॥ केसर अतर गुलाव कीच तिय डारहिं सुरन पर भरि गगरी ॥ सुर बनिता मिलि कजरी गावति । विवुध बजावहिं मुदित खंजरी ॥ हरितन सजल जलद सम सोभित ॥ कमला तन जनु चमकति विजुरी ॥ भजन करहु पद हरि प्यारी के ॥ काशी शिव शिव शंकर नगरी ॥ ७९ ॥

॥ पुनः ॥

देखो जलधि सुताहरि खेलै कजरी ॥ पीतांबर हरि अंग विराजत । कमला तन सोहै ललित चुनरी ॥ गावत किन्नर नाचै अपछरा

बरसत घन झिमिझिमि लाई झरी ॥ देविभजन विनु हे नर मूरख । जनम जनम तोरि नहि सुधरी ॥ अवरि बार भलि अवसर पाये काशी भजु नित्यानन्दकरी ॥ ८० ॥

॥ मलार ॥

पथिक सुनिलीजो बचन हमारे ॥ जनम जनम की तोरि कमाई सो सब हाथ तिहारे ॥ ठग अनेक तेरे संग लागे लूटत सांझ सकारे। स्वास रतन छन छन मंह सोहत हिय मंह कछू न बिचारे ॥ ठगहि नहीं पहिचाने मूरख निज धन नहीं संभारे ॥ जो चाहत बचिवो यहि अवसर बुधि विवेक हिय धारे ॥ काशी सेइ भजहु कमला को सेवक जाहि पियारे ॥८१॥

॥ सोरठ ॥

मोहि भरोसे रमाजी को एक ॥ माया को आवरन कठिन अति लई विवेकहि छेक ॥ निज

स्वरूप नाहि परत लखाई कीने जतन अनेक ॥ करम विवस लहि मोह जगत मह लीन्हे जनम कितेक ॥ भगवति भजन बिना हो दुख भोगत सुख पावत नहिं नेक ॥ नहीं तप जोग नहीं ब्रत सजम नाहिं बुधि बिमल विवेक ॥ काशी सेइ भजिये कमला पद इह हमारे टेक ॥ ८२ ॥

॥ पुनः ॥

मोहि सदा कमला की आस ॥ अखिल विश्वसचराचर जहँलगि जासु जो सुनिमेख विलास ॥ भजहिं जासु पद कमल निरन्तर विधि हरि नारद ब्यास ॥ वहति वयारि जाहिं के प्रेरे वरखत जलद अकास ॥ चलत भानु भय मानि जासुनभ ध्यावत शिव कैलास ॥ हरि प्यारी त्रिभुवन की जननी यम डरपत जेहि त्रास ॥ ताहि विसारि विषय मद माते कैसे छुटै भव

फाँस ॥ धारिय तासु अनन्य प्रीति सुनि तासु चरित इतिहाँस ॥ कमला चरण कमल भजिये करि काशी धाम निवास ॥ ८३ ॥

॥ राग बसंत ॥

सेइये सप्रेम हरि प्रिया माय ॥ लहि सुभग दुरलभ मनुज काय ॥ प्रभुता लहेउ हरि जाहि पाय ॥ भव तरहि मुनिगन सुजस गाय ॥ अतु-लित प्रताप महिमा अनंत ॥ वेदहु नाहि पाये आदि अंत ॥ ध्यावहि सदा जेहि विमल संत ॥ जोगिन्द्र हियजो निति वसंत ॥ वैकुंठ धाम जाको बिलास ॥ जहँ रितुबसंत कर निति निवास ॥ वसिये रमापद प्रीतिलाय ॥ काशी सुखद शिव धाम आय ॥ ८४ ॥

॥ पुनः ॥

खेलति बसंत सागर कुमारि ॥ सुठि पीत बसन भूषन सँवारि ॥ मणि पीत जडित भूषन

सुअंग ॥ गावति सुरतिय बाजत मृदंग ॥ छवि लखि लजहि कोटिन अनंग ॥ तन जोति मनहु कोटिन पतंग ॥ बीना पखावज सहित ताल ॥ बाजत गावत गंधर्व बाल ॥ सुर गन नचत अति मोद पाय ॥ काशी शिवहि डमरू बजाय ॥ ८५ ॥

॥ सवैया की ठुमरी ॥

देखो आजु अली मोरे सिन्धु लली नन्दन वन ते चलि आवति है ॥ हरि हाथगहे कर कंज लिये गति मंद गयंद लजावति है ॥ लखिरूप अनूप विबुध वनिता छवि अतुल सराहिं बतावति है ॥ महिमा गुन रूप बखानि न जाय सरस्वति पार न पावति है ॥ योगी हिय ध्यान लगाय लखैं श्रुति सिन्धु सुता गुन गावति है॥ कमला पद पंकज भक्ति सदा कलि पाप कलाप नसावनि है ॥ जिनकी माया सचराचर को निज

कर तल माहि नचावति है ॥ भजिये कमला पद पंकज जो काशी महँ मुक्ति लुटावति हैं ॥८६॥

लखि सिन्धु सुता गुण रूप सदा मेरे मनमें अति भावतु हैं ॥ बैठी वर रतन सिंघासन पर करिवर सित चारि अन्हावतु हैं ॥ हरि ओर निहारि कटाक्ष करै माधव लखि प्रीति बढ़ावतु हैं ॥ सुर कंचन थार लिये करमें करि आरति शुभ गुन गावतु हैं ॥ चतुरानन श्रीमहिमा बरनै पंचानन चवर ढुरावतु हैं ॥ सुरपति अपने कर छत्र गहे हरि निज कर पान खवावतु हैं ॥ सलिलेश लिये जलकी झारी शशि ठाढ मुकुर देखावतु हैं ॥ कज्जल को अनल गहेकर में मारुतगन व्यजन डोलावतु हैं ॥ नेवछावर करि मुकुता मनि को धन पति बहुकनक लुटा-वत हैं ॥ सनकादि निहारि शरीर विसारिमा हरिके गुन गावतु हैं ॥ महिमा अतुलित नहिं

जाय बखानि गनेशहु पार न पावतु हैं ॥ काशी भजु सिंधु सुता पद को जेहिं सबसुर सीस-नवावतु हैं ॥ ८७ ॥

॥ ठुमरी ॥

हरि प्यारी पद पदुम सदा मन पागत काहे नही रे । सोवत सारी रैनि गवावत जागत काहे नहि रे ॥ जगकानन घन हाथ लिये भय लागत काहे नँहिरे ॥ संग ठगन को अति दुख-दाई त्यागत काहे नँहिरे ॥ रमा भक्ति सेवक कलपद्रुम अनुरागत काहे नहि रे ॥ जगत निर-न्तर कमलाको शरणागत काहे नँहिरे ॥ काशी रमाजी के चरन भक्ति वर मांगत काहे-नहिरे ॥ ८८ ॥

हे मनकाहे गंवावै उमिरिया ॥ विषय भोग ते नाहि अघाने गाये न देवी हुनरिया ॥ आपुहि अपने गरे लगाये माया मोह फसरिया ॥ चारि

दिना को जग नइहर यह बहुरि उहै ससुररिया॥ सतगुर पूछ खोजि पथिक को बूझहु पिया मिलने को उहरिया ॥ काम क्रोध जार सँग लागे तोहि बनावै पतुरिया ॥ तिनहि निरखि जिनि नैनके कोरहु जो कुलवंती बहुरिया ॥ जो कुल कानि राखिवो चाहे ओढै धरम चद-रिया ॥ साची प्रीति राखि प्रीति सो महि बसु निति काशी नगरिया ॥ ८१ ॥

॥ पुनः ॥

देखो सिंधुसुता की छबि अनूप आजु मोरे हिय वसि गई हो ॥ चन्द्रवदनि मृगलोचनि कमला अधर ललित नाशा सुठि बिमला अलक स्याम कुन्तल मन महँ नागिनि जनु डसि गई हो ॥ रूप राशि सचराचर जननी सुर पालिनि दानव गण हननी वेणी जनु छवि जाल चित्त हारिनी मेरि फंसिगई हो ॥

शुभ भुज चारि उभय कर पंकज अपर जुगल वर अभय तापहर मुख शशिकान्ति निरखि मन को सब कसके निकसि गइहो ॥ अमृत कलश अन्हवावत करि वर चमरं छत्र गहे विधि शंकर आरति करति विबुध जुवति सब परम हुलसि गई हो ॥ कलिजुग होंय सकै नहि तप ब्रत केवल देवी भजे पाव गति काशी कमला आपु मुक्ति को देति निवसि गई हो ॥ १० ॥

॥ मलार हिंडोला ॥

कमला झूलति रंगहि हिंडोरै ॥ मणि मय खंभ कनक मय झूला गावँहि सखि चहु ओरै ॥ मुदित झुलावत नारायन प्रभु गहि रेशम की डोरै ॥ घन गरजत दामिनी अति चमकति उपबन नाचहि मोरै ॥ शीतल मंद सुगंध पवन अति पिक दादुर कर शोरै ॥ ब्रह्मादिक सुरगन सब ठाढे हरि वनिताहि निहोरै ॥ बूंद फुहार

वहति पुरवैया मंदाकिनी हिलोरै ॥ निरखि रूप सुमुद्र सुता को सुरतिय लजि तृन तोरैं ॥ काशी भजिये ताहि कमला को जेहि हरि हर कर जोरैं ॥ ११ ॥

देविविनु कोउ नहि ऐहै काम ॥ सुत पितु मातु कुटुंब जग जेते संबन्धी धन धाम ॥ अंतकाल कोई काम न ऐहै जब चलिहै जम धाम ॥ जग मँह पतित अधम खल जेते मैं तिन महँ सरनाम ॥ छमिहै सोई अपराध हमारे कमला सिन्धु ललाम ॥ तरे अनेक पतित प्रति जुग महँ भजि जगदम्बा नाम ॥ काशी अपर सबहि विसरायो भयेउ रमाको गुलाम ॥ १२ ॥

कस न द्रवहु सुनि विनय हमारी ॥ कमला छीर समुद्र कुमारी ॥ मधुकैटभ अति प्रबल असुर बरणाई समर विधिहि प्रचारी ॥ विनती विधिकी सुनिजग जननी प्रगटिता सुभय सकल

निवारि ॥ महिषासुर अमरावति जीती तब सुर-
गन जग मातु हँकारी ॥ सहि न सकी निज
दासन को दुख बधी धारि अवतार हयारी ॥
दानव शुंभ निशुंभ विदित जग रक्त बीज सुर
मुनि दुख कारी ॥ चंडमुंड आदि खल जेते
सुर हित लागि चंडिका मारी ॥ भूप सुरथ रिपु
भय अति पीडित जगदम्बा कँह जबहिं पुकारी॥
लहि बरदान जीति बैरी गन पाइ राज सुख
भयेउ सुखारी ॥ नृपति सुदरशन कँह जब घेरे
रिपु समाज सेनां दल भारी ॥ जन सहायहित
आपुहि प्रगटी ताहि राखि रिपु गन संघारी ॥
अब विलंब कबहु नहिं लाई दासन जब सुधि
तोरि सुधारी ॥ हम आजु कहां विलमी जग
जननी मनहु पाछिली बानि विसारी ॥ नहि
विलंब कर अवसर जननी करहु कृपा मम दशा
निहारी ॥ काशि प्रसाद दास चरननका को
राखत केवल आस तेहारी ॥ १३ ॥

नरतन चिंतामनि पाई ॥ मूरख क्यों देत गवाई जबते श्रीपद विसराई ॥ नरतन भीति तबहिं से छाई ॥ खेलत बीती लड़िकाई ॥ तरुणी लूटी तरुनाई ॥ अब पहुंची आय बुढ़ाई ॥ सब गात गये सिथिलाई नैननते नाहि सुझाई ॥ श्रव-नन नहिं बैन सुनाई ॥ विषया विषमाहिं लुभाई॥ कमला पद भक्ति बिहाई ॥ जगमें अति प्रीति बढ़ाई ॥ भव बन्धन माहि बँधाई ॥ हिय दरपन लागी काई ॥ कैसे निज रूप लखाई ॥ माँजै गुर पद रज लाई ॥ तब आतम रूप दिखाई ॥ काशी कमला भजुभाई ॥ जहँ पतितहु शंभु बनाई ॥ १४ ॥

श्रीविंधवासिनी महारानी की जन्म बधाइ मंगल ॥ विन्धवासिनी मातु नन्दगृह अव-तरी ॥ आजु जगतके सकल शोक संकट हरी ॥ तिथि अष्टिमि वुधवार मास भादों

सुखद ॥ परम सोहावन रितु नभ महँ छाये जलद ॥ अरधरात्रिके समय नक्षत्रशुभ रोहिनी ॥ अजा मूल प्रकृती जनमी जग मोहिनी ॥ सुर मुनि हित भई प्रगट जसोदा नन्दनी ॥ अखिलेश्वरि जगदंब सुरासुर वन्दनी ॥ कंस बकासुर आदि असुर वध कारिणी ॥ हरि रक्षाहित आपु प्रगटि जग तारिणी ॥ कंसहिं भावी भाषि गगन मारग चली ॥ कहहिं सकल सुरमुनि जै जै जसुदा लली ॥ विंधाचल रमणीय परम पावन शिखर ॥ तहाँ करी अस्थान अखिल संतापहर ॥ विन्धेश्वरि गोविन्द सहोदरि सुन्दरी ॥ सुमिरन नासति पाप मंजु मंगल करी ॥ जे यह मंगल ललित प्रीति युत गावहीं ॥ काशी देवि कृपा उत्तम गति पावहीं ॥ १५ ॥

सोहति उमा उमापति जोरी ॥ रजताचल द्युति शंभु श्वेत तन गिरिजा कनक लता छवि

गोरी ॥ गंग फुहार झरत इत झरना श्रीफल उतव छोज फरोरी ॥ वाघंवर शिव शंकर पहिरे ललित बसन गिरिराज किशोरी ॥ जुगल भाल शशि खंड प्रकाशित तीनि तीनि दृग सुखद लखोरी ॥ भस्म त्रिपुड भाल गिरिजापति उमा लिलार बिराजति रोरी ॥ मृग वर अभय परसु शंकर कर पारवती कर कमल लसोरी ॥ जोरी अति कमनीय मनोहर निरखि इहै विनवों कर जोरी ॥ ध्यान परम कल्यान हेत यह काशी के हिय धाम वसोरी ॥ १६ ॥

सागर नन्दनि की बलिहारी ॥ रतन सिंघासन कमलासन पर बैठी जलधि कुमारी ॥ आदि शक्ति ब्रह्मादिक जननी भक्तिहेतु वपुधारी ॥ चारि भुजा चारिहु फल दाता जुग पंकज भय हारी ॥ वरदायक अति रुचिर मनोहर शरणागत सुखकारी ॥ नखसिख मणि

मय भूषन भूषित दीपित कनक मय सारी ॥ सीस रतनको कीट विराजत अन्हवावत गज-चारी ॥ दीरघ नयन कटाक्ष विलोकत मोहतदेव मुरारी ॥ हरि निज हाथनि पान खवावत विधि हर चामर ढारी ॥ जगदम्बा समान त्रिभुवन महँ को जीवन हितकारी ॥ काशी सागर सुता बनावति सब जीवहिं त्रिपुरारी ॥ १७ ॥

हरि बनिता पद प्रीतिहि ठानो ॥ मैं बालक अथाह भव सागर निरखि अपाने डरानों ॥ मातु समुद्र सुता कहँ परि हरि अपर हितू नाहि जानों ॥ जदपि अधम आलसी भजन को विषय भोग लपटानो ॥ तदपि भरोस मोहि कमला को अपर नहीं मनमानों ॥ औरन सो कछु काम न मोकहँ सपनहुं नहिं मन आनो ॥ काशी केवल हरि ललना कर बिनु दामहीं बिकानों ॥ १८ ॥

सुमिरौं सेवक तारिणि तारा ॥ अमित प्रभाव प्रगट जग जाको महिमा रुचिर उदारा ॥ नारदादि मुनि गुन गनिहारे पायउ वेद न पारा ॥ शिव बिरंचि नहिं सकहि बखानी भगवति चरित अपारा ॥ जगदम्बा पद भजन जगत महँ अघ काटन को आरा ॥ जेते पामर पतितहिं तारी तेते नभ नहिं तारा ॥ अधम उधारन हित काशी महँ बहति मुक्ति की धारा ॥ ११ ॥

सुमिरौं भुवनेशी महरानी ॥ जासु प्रताप विदित त्रिभुवन महँ महिमा वेद बखानी ॥ आदि जोति ब्रह्मादिक जननी भुवनेश्वर पट-रानी ॥ अति उत्तम मणि दीप जासु सुठि परम सुखद रजधानी ॥ ब्रह्मासन पर मुदित बिराजति भुवनेश्वरि कल्यानी ॥ उदित भानु दुति मुख पंकज छबि अँखिया कछु अलसानी ॥ पाशां-कुश कर जुगल उभय कर अभय रुचिर वर-

दानी ॥ हौंतो कुटिल पतित मोकहँ जग दास ते हारो जानी ॥ कृपा करहु सेवक काशी पर चरन दास निज मानी ॥ १०० ॥

धूमावतीजीका भजन राग मलार ।

बन्दौं धूमावति शिव वामा ॥ टेक ॥ नील बसन भूषन तन सोहत मनहु सजल घन स्यामा ॥ धूम्र वरन पति भैरव राजित काल राज अभिरामा ॥ काक पताक ध्वजा पर शोभित रूप परम छबि धामा ॥ रथ मँह काक लगे हैं जोरी शुभपूरइ जनमन कामा ॥ सुमिरहिं जासु प्रताप बिवुधगन मुनिवर बर वसुजामा ॥ काशी भजि भगवति धूमावति लहत परम बिश्रामा ॥१०१॥

बगलामुखीका पद ।

भजुमन श्री बगला महरानी ॥ टेक ॥ पीत बसन मणि पीत बिभूषन पीत माल सुख दानी पीत तिलक अनुलेपन पीतहिं छवि नहिं

जाति बखानी ॥ निज दासन के रिपुको वाचा स्तभण करति भवानी ॥ बगलामुखी मातु करुणा मइ अमित रूप गुन खानी ॥ अतुल प्रभाव जासु बरनत सुर मुनिवर सज्जन ज्ञानी ॥ काशी किंकर तव चरनन को पालहु निज जन जानी ॥ १०२ ॥

श्रीभैरवी महारानी का भजन ।

करु मन भैरवी गुन गाना ॥ टेक ॥ भैरव संग विराजति जननी करति सदा मधु पाना ॥ कर कपाल दंपति के सोहत करति बिहार मसाना ॥ मृतक मास को भोग लगावत सुरति करति बिधि नाना ॥ जोगिनि नाचहिं किन्नर गावहिं लहि आनंद महाना ॥ साधक जन कहँ सिद्धि देति जो महिमा अगम बखाना चटुक नाथ भैरवि पद भजिकै कौशिल होहु निरवाना ॥ १०३ ॥

श्रीमातंगी जीका भजन।

भजुमन मातंगी मुदकरणी ॥ टेक ॥ जाहि सदा योगी हिय ध्यावहिं सकल अमंगल हरणी ॥ केवल जासुनाम पतितन कहँ भव तरिबे की तरणी ॥ महिमा जासु अनन्त अलोकिक वेद सकै नहिं बरणी ॥ आदि शक्ति त्रिभुवन की कारणि श्रीशंकर की घरणी ॥ अखिल चराचर हृदय निवासिनि मनमतंग वश करणी॥ निति काशी मँह मुक्ति लुटावति सुरसरि तट मणि करणी ॥ १०४ ॥

श्रीछिन्नमस्तिकाजीका भजन राग मल्लार।

नहिं छिन्नासम कोउ हितकारि ॥ टेक ॥ विपिन विहार करत सखियनको तृषालगी जब भारी ॥ लखहु दया त्रिभुवन जननी की निज शिर आपु उतारी ॥ निज ग्रीवाते अमृत धार जब आपुहि तीनि निसारी ॥ एक आपने मुख मँह लीन्ही अपर जुगल सखि प्यारी ॥ ऐसी

दया सुनी नाहि कबहुं छिन्नाकी बलिहारी ॥ अस दयालु जननी कँह परि हरि अपराहि भजहिं अनारी ॥ प्रणात पालिनी सुजस विदित जग जन दुख पाप प्रहारी ॥ काशी तव शरणा गत जननी पालहु दोष निवारी ॥ १०५ ॥

ठुमरी ।

काहे अलसानी कमला महरानी ॥ टेक ॥ जब जब दासन तोहिं पुकारत कबहु विलंव न ठानी ॥ मोहिं पुकारत बहु दिन बीते मम सुधि काहे भुलानी ॥ महिमा अतुल बखानत थाके सुर नर मुनि विज्ञानी ॥ विधि हरिहर गनपति सुर नायक सेवहिं हरि पटरानी ॥ करहु कृपा मो पर हरि प्यारी दास आपनो जानी ॥ काशी कीट पतंगहु पावत जोगति जाचत ज्ञानी ॥ १०६ ॥

इति श्रीदेवी भजन मुक्तावली काशीप्रसाद विरचिता समाप्ता शुभमस्तु श्रीहरिवल्लभा लक्ष्म्यार्पणमस्तु ॥ भाद्र कृष्ण नवम्यां गुरुवासरे सम्बत १९१५ ॥

दोहा ।

ललित भजन मुक्तावली, नाशिनी सकल बिखाद
रची रमापद प्रीति हित, जनकाशी परसाद॥१॥
किये कंठ रीझै अवसि क्षीर समुद्र कुमारि ।
अस बिचारि हिय कंठ में सज्जन राखैं धारि॥२॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

ठुमरी ।

उमिरिया तेरी दिन दिन बीती जात ॥
बाल युवा दोउ वृथा विताये सिथिल भये अब
गात ॥ केश श्वेत भये आइ बुढाई अबहुँ न
सोचत तात ॥ छन छन में तेरि आयु घटति
है नहिं सुमिरत जग मात ॥ सोवत सारी रैन
बीति गई होन चहत अब प्रात जग महँ
जिनहिं आपनों जानत सुत दारा पितु भ्रात ॥
अन्त समय कोउ काम न ऐहैं जैहैं तुही पछ-
तात ॥ अधम उधारनि जगदम्बा बिनु हित नाहि

अपर लखात ॥ काशी सेइ भजो हरि बनिता मानि हमारी बात ॥ १ ॥

ठुमरी ।

भजन बिनु काहेको जनम गँवाये ॥ जनमत मरत बहुत दिन बीते अब मानुख तन पाये ॥ खान पान महँ बहुरि लुभाने नहिं देवी गुन गाये ॥ यह तन रंग महल्ल पीतम को ता महँ जबते आये ॥ सेज सँवारत रैनि सिरानी तनिकहुं सुख नहिं पाये ॥ थाके चलत अगम मारग महँ अघको भार उठाये ॥ नर तन अति सुख धामहु लहि तुम छन भरि नहिं सुसताये ॥ त्याग भक्ति सुधा मृत मूरख विषयन माँहि लुभाये ॥ विनु काशी गति कैसे पावै जे नर पतित कहाये ॥ २ ॥

पुनः ।

कबहुं नहिं जगदम्बा गुन गाये ॥ रतन अमोल स्वास निज मूरख कौडी के मोल

गँवाये ॥ माया स्वामिनि पराशक्ति जो तासु चरन नाहिं ध्याये ॥ सोई पंडित सोइ विज्ञानी श्रीपद प्रीति दृढाये ॥ माया बंधन ते किमि छूटै बिनु जगजननी छोडाये ॥ सदा भजन करिये भगवति के सेवक जाहिं सोहाये ॥ काशी जो गति मुनिवर जाचत कीट पतंगहुं पाये ॥३॥

देवी भजु भाई रे तैं देवी भजु भाई रे ॥ क्या जग जाल रहत अरुझाईरे ॥ सुत पितु भ्रात परिवार लोगाईरे ॥ अंत तेरे संग प्यारे कोई नाहिं जाइ रे ॥ बीती लड़िकाई तेरी गई तरुणाई रे ॥ अजहूं न भजे भवानी आइ है बुढाईरे ॥ आँखिन सुझाई नाहि श्रवन सुनाईरे पग थह-राई गात गई मुरझाईरे ॥ तजि कदराई रे ॥ काशी बिनु पतितम नहिं गति पाईरे ॥ ४ ॥

सखि मोहिं वह छबि बिसराति नाहीं ॥ सिंधु किशोरी संग रमापति रंग महलके माहीं॥

फूलन रचित सेज पर पौढे दंपति गहि गल-बाँही ॥ हाँस विलास करत आनंद भरि पानकी बीडी खाही ॥ काशी निहारि वारि तनकी सुधि बार बार बलि जाही ॥ ५ ॥

आजु हम देखी अनोखी झाँकी ॥ नन्दन बन बिहरत छबि अतुलित हरि संग सिंधु सुता की ॥ फूलनि के भूषन सब पहिरे छाया कलप लताकी ॥ बाँह एक हरि काँधे धरि चितवति बनि बाँकी ॥ लखि मोहत माधव मन छन छन दुति अनूप कमलाकी ॥ कांति निरखि कोटिन शशि लाजत बदन सरोज रमाकी होति मंद हरि तेज बिलोकत प्रभाकोटि सविताकी ॥ सिंधु लली गुनरूप बखानत शेषहु की मति थाकी ॥ काशी बरनि सकै छवि कैसे हरि प्यारी पदमाकी ॥ ६ ॥

देखो सखि राधा चितवति बांकी पल, पल

मह मोहन मन मोहति डीठि मोहनी ताकी ॥ लोक लाज कुल कानि गवाई डर नाहिं मातु पिता की ॥ सुखद कदम तर ठाढी निरखति छहियां कुंज लताकी ॥ मदन गोपाल प्रीति रंग राती तनया वृष सविताकी ॥ जासु अमित गुन रूप बखानत शारद की बुधि थाकी ॥ काशी के हिय देति परम सुख छबि वृष भानु सुता की ॥ ७ ॥

देखो सखि छबि अपार राधा की ॥ नील बरन सारी तन पहिरै सजल जलद उपमा की- चमकत करन फूल कानन महँ मनहुं दमक चपला की ॥ बगपाती जनु परम मनोहर गरे माल मुकुता की ॥ हरि चात्रिक अनंद ल- हत लखि छबि बृष भानु सुता की ॥ जाहिं निहारत विसरिजात सब सुधि बुधि नंद लला की ॥ तासु रूप बरनै किमि काशी महिमा अतुलित जाकी ॥ ८ ॥

लखि मुख छबि क्षीर समुद्र लली को ॥ अब न आँखितर आवत कोऊ सब जग लागत फीको ॥ कोटि चन्द्र सम कांति मनोहर माँग लसत मणि टीका ॥ श्रवन रतन ताटंक विराजत नासा वेसर नीको ॥ मानिक कीट सीसपर राजित उपमा नहिं चोटीको ॥ बर अरु अभय उभय कर पंकज करिकर कलश अमीको ॥ कनक बसन नखसिख मनिभूषन कँठहार मोती को ॥ मृदु मुसुकानि दृगनके कारनि मन मोहति निजपीको ॥ अखिल चराचर पालिनि लक्ष्मी प्राणाधिक सबहीको ॥ भुक्तिमुक्ति दाइनि हरि प्यारी जीवन जन काशीको ॥१॥

सुनहु सुदर्शन यह प्रण मेरो ॥ जब जब सुरमुनि ममप्रिय सेवक आरत मोकह टेरो ॥ सहि न सकौं दुखनिज भक्तन को संकट हरति घनेरो ॥ खलदल प्रबल निर्बल जाने तोहि

काल विवश जब घेरो ॥ तब सहाय हित आतुर धाई समुझि भक्ति दृढतेरो॥ निज प्रन प्रतिपाल-हु जगजननी मम करनी जनिहेरो ॥ काशी प्रसादहि आस तेहारी तुव चरनन को चेरो ॥१०॥

सखि सैन समैया सिन्धु सुता को फूलन सेज दसावोरी ॥ अतर गुलाब पान की बीडी मधु मेवा फल लावोरी ॥ कुंद गुलाब चमेली के रचि गुच्छा हार बनावोरी ॥ फूलनि के भूषन सब रचिकै स्वामिनि तन पहिरावोरी ॥ चोवा चंदन मृगमद केशर अनुलेपनहि लगावोरी ॥ साजि सिंगार आंजि दृग अंजन बाहर खबरि जनावोरी ॥ दंपति कँह पौढाई सेजपर व्यंजन विचित्र डोलावोरी ॥ छविनिहारि वारि तन मन सुधि मनकी तपनि बुझावोरी ॥ काशी सेइरमा हरि के पद हरि प्यारी गुन गावोरी ॥ ११ ॥ चंच ।

रूप छबि धाम अभिराम जन काम तरु शील गुन ग्राम सागर कुमारी ॥ सीसमणि क्रीट जगमगात कुंडल श्रवन कनक मय लसति तन ललित सारी ॥ जुगल करकंजु जुग मंजु पंकज धरे अपर वरदान भवभय प्रहारी ॥ कमल आसीन कटि छीन कुचपीन सुठि श्वेत गज चारि कर कलश धारी ॥ मीन मृग खंज लजि जाहि दृग कंज लखि कोटि कंदर्प प्रति अंगवारी ॥ दिपित तन जोति लखि मद उद्योति रविहोति छबिहीन शशि मुख निहारी ॥ धारि हिय दरद निज विरद पाली सदा अमित खल पतित जगदंब तारी ॥ विनय काशी करत जोरि कर नाइ शिर हरहु दुख हरनि मम दुरित भारी ॥१२॥

॥ ठुमरी ॥

सोहागिनि पुनि पछितैहैरी तजु जोबन अभिमान ॥ पति अनुकूल समीप तेहोर तासु

करति अपमान ॥ सोवत सारी रैन बितावत चाहत होन बिहान ॥ संगति कामादिक पापिन की नाहक गहति अजान ॥ ए सब तोहि वि-गार विगारे तोहि नहीं पहिचान सुखद सेज नरतन को पाये जो न लहै प्रियप्रान ॥ भोरभये पुनि तोहि न पैहैं बचन हमारे मान ॥ प्राण धार पिया प्यारे सो उचित न मान गुमान ॥ काशी मुक्ति धामलहि सब ले पावत पद नि-र्वान ॥ १३ ॥

पियागृह किमि सुख पै हरी दुलहिनि त्यागु गुमान ॥ करु उपाय प्रीतम मिलाप की दुख नहिं बिरह समान ॥ यह नैहर चारि दिना को पुनि प्रीतम घर जान ॥ वृथा कहा खेलति गुडियनि सँग चेतत नाहिं अजान ॥ रसिक शिरोमनि नाह तेहारो जानत सकल जहान ॥ ताहि न भावत कपट कुटिलता दंभलोभ अभि-

मान ॥ यहि कलिकाल कठिन जप तप व्रत सुगम उपायन आन ॥ काशी नारायण प्यारी भजि जो चाहत कल्यान ॥ १४ ॥

पिय कैसे रिझैहैरी हे मन नारि अनारि ॥ चपल प्रकृति तेरी जीभ चटोरी अखियां बड़ी झवारि ॥ चतुर सुजान रसिक तव लालन तू बडि मलिन गँवारि ॥ अंजन ज्ञान आंजि हिय नैना धरम विभूषन धारि ॥ चटकीली पिय प्रीति रंगीली चुनरी ललित सँवारि ॥ प्रीति अनन्य भवानी को गहि कपट कुचाल निवारि ॥ काशी सेइ भजै निशि बासर भगवति जलधि कु-मारि ॥ १५ ॥

मातु छमिये करि करुणा हो मेरे अपराध अपार ॥ विश्वव्यापिनी तोहि न जानेउँ तीरथ फिरेउँ हज़ार ॥ वानीपरा जाहि श्रुति गावति अस्तुति करेउँ उचार ॥ मन बुधि जेहि अनु-

मानि सके नहिं मुनिगन मानेहार ॥ तासुरूप बहु विधि हिय ध्यायउं ऐसो मूढ़ गँवार ॥ अ-जा अजन्मा वेद कहत जेहि महिमा जासु उदार ॥ निज अज्ञान बिवशताहू कर मानेउ वहु अवतार ॥ सब पापहि ठहरते जो जो हम कीन्हे धरम विचार ॥ काशी हरि प्यारी बिनु मेरो कवन करे निस्तार ॥ १६ ॥

तुम बिनु मातु सुनैको मेरी ॥ अधम उधरिनी नाम विदित तब सुनि आयउ शरणागत तेरी ॥ खल पामर नर महापातकी परम कुचाल कुटिल जगजोरी ॥ तिन्ह पति तन मँह महापतित मैं मोहि तारे तब कीर्ति घनेरी ॥ सुयश ख्यात जग मँह जननी को सुत करनी कबहूँ नहिं हेरी ॥ याहि हेतु तब चरण लुभानो अपर सबहिते नि-ज मुख फेरी ॥ टेरत मोंहि बहुत दिन बीते का-रण कवन लगी बड़ी देरी ॥ जो गति योगी मुनि गन जाचत काशी कीट पतंग लहेरी ॥१७॥

छमिये मातु अपराध हमारी ॥ तीरथ विविध फिरउ तोहिं हेरत जग व्यापिनि तव नाम वि-सारो ॥ बानीपरा वेद तोहि भाषत मैं मूरख अस्तुतिहि उचारो ॥ मन बुधि जाकर रूप अलौकिक हिय अनुमान करत जेहि हारो ॥ ताहि विरूपा परा शक्ति कर ध्यान आपने हृदय सुधारो ॥ अजा अनामिनि मातु अजन्मा ताको जनम अनेक बिचारो ॥ काशी सब अपराधहि कीन्हे लज्जित टेरत शरण तेहारो ॥ १८ ॥

रूप शीलगुन धाम जलधि तनया छवि आजु निहारी री ॥ कोटि चन्द्र छबि कोटि नर विछविसोहति अति हरि प्यारीरी नंदन बन वि-हरत हरि कर गहि निज कर सिंधु कुमारीरी ॥ बांकी चितवनि लखि कमला की मोहि रहे बन वारीरी ॥ फूल नर चित मुकुट शिर सोहत तन सारी जरतारीरी ॥ तामे फूल की अति सुन्दर

लागी वेल किनारी री ॥ फूलनि की सुठि बनी कंचुकी लागी बकुल निवारी री ॥ सुन्दरता के फूलनि मानो फूलि रही फुलवारी री ॥ जासु अधीन चराचर स्वामी श्रीवैकुंठ विहारी री ॥ जगदम्बा परब्रम्ह रूपिनी कमला की वलिहारी री ॥ महिमा जासु अनन्त बखानत शारद की मति-हारी री ॥ काशी हरखि निरखि वा छवि को तन मन सुधि बुधवारी री ॥ ११ ॥

ललित समुद्र लली छवि आजु अली भरि नैन निहारी री ॥ रतन सिंघासन कमला-सनपर अति सोहति हरि प्यारी री ॥ जुग कर कमल अभय वर सुन्दर परम रुचिर भुजचारी री। अंजन आंजित दृगकंजन पर मृग खंजन गन वा-री री। अन्हवावहि गजचारि अमृत भरि कनक क-लश करधारी री ॥ जगमगात रतनन को भूषन दिपितताश की सारी री ॥ जाने न जाय मातु

केहि कारण मेरी सुरति विसारी री ॥ काशी ते-
रोइ दास कहावत राखत आस तेहारी री ॥ २० ॥

रे बटोहिया तोहि कहौं समुझाय। ठग अ-
नेक तेरे संग लागे हैं सुत दारा पितुमाय ॥
रतन अमोल स्वांस तेरो लूटहि झूठी प्रीति दे-
खाय ॥ ए तेरे सँग दगा करेंगे मोहकी फांसी
लगाय ॥ अब लों इनहिं नहीं पहिचाने पंथहु
गयेउ हेराय ॥ सुगम पंथ सत गुरूते पूछहु
निज गृह पहुंचौ जाय ॥ काशी पतितहु मुक्ति
लहत हैं जगदंबा गुनगाय ॥ २१ ॥

भगवति कलिमल कलुष बिनाशिनि सुर-
सरि जन्हु कुमारी री॥ पापताप संताप निवारिनि
गंगा की बलिहारी री ॥ दरस परस मंजन
अघ नासत सुरसरिता को वारी री ॥ सोऊजी
वहितारति जो सुरसरि लगि बहाति बयारी री ॥
मृग मद चर्चित जुगलपयोधर प्रात न्हाति नृप-

नारिरी ॥ सुरसरि परस प्रभाव होंहि ते मृग नन्दन बनचारि री ॥ गंगसलिलकण परसत पापिहु होत सुगति अधिकारी री ॥ चढि विमान कैलाश जातलहि सुरतिय चामरढारी री ॥ जदपि विबुध सरिता त्रिभुवन मँह सुरनर मुनि हितकारी री ॥ मुक्ति प्रवाह तदपि काशी अति पामर खल बहु-तारी री ॥ २२ ॥

गंगा की बलिहारी मैं सुरसरिता की बलिहा-रीरी । जासु सलिल नर पान करत तजि देह होत त्रिपुरारीरी ॥ कलिमल ग्रसित दुरित पूरित खल पतित अनेक उधारीरी ॥ महिमा जासु निर-खि गंगाधर निज मस्तक पर धारीरी ॥ जदपि अखिल अघहारिनि सुरसरि पामर जन बहुतारी री ॥ तिन मँह मोहि नजानहु गंगा ममतारन बहुभारीरी ॥ तोहि गरब खलतारन को उड ता-रत कबहु न हारीरी ॥ मोहि उधारत जानि परेगी

करनी मोरि निहारीरी ॥ टेरत मोहिं बहुत दिन बीते काहे सुरति बिसारीरी ॥ काशी मुक्ति त-रंग निरखि तव निज मन सुधि बुधि वारीरी ।२३।

सुनहु मातु भुवनेश्वर प्यारी। करुणा करि यह बिनय हमारी ॥ जैसे विविध पतित खल पामर धारि दया जगजननि उधारी। तिन पतित-न मैं मोहू जानिये करुणा करि अपराध बिसारी। भुवनेशी मुख आवत ही जो देति निसंक भुवन दशचारी। सुनिपुनि पाहि वचन जग जननी सकु-चाति आपुहि आणी विचारी। जौ कृपालु जननी मोहूं पर यहवर देहुदया हियधारी। काशी के मानस पंकज मधि वसहू सदा हरि सिन्धु कुमारी ॥ २४ ॥

धेयं सदा समुद्र सुता पाद पंकजं ॥१॥ मो-हादि रोग नाशकरं दिव्य भेषजं। कल्याण हेतु-मार्तिहरं भुक्ति मुक्तिदं ॥२॥ सेव्यं विरंचि शंकराधि

वैर्यस्य श्रीरजं। भक्त्यार्द्रविभूतिकरं धर्मकामदं ॥३॥ यंसंयुतं सुचिन्ह शुभैर्पंकजादिभिर्वाण्यांकुशादिकं चापं चामरंधृतं ॥ काशी करोति सिन्धु सुते प्रार्थनामिदं । मह्यं प्रदेहि भक्ति रमे निश्चलानिजं ॥ २५ ॥

भजो श्रीसिन्धु कन्या को चरित जिसकी न्यारी है। महा माया जगत माता रमा गोविन्द प्यारी है ॥१॥ जिसे जोगी सदाध्यावै जिसे मुनि ब्रह्म ठहरावै। निगम नहिं अंत को पावै वही सागर कुमारी है ॥२॥ जगत को जिसने है सिर्जा वही कमला वही गिरिजा। भजो दिल में धरो धिर्जा बहुत पापी उधारी है।३। रतन का क्रीट सिर सोहै ललित छबि देखि हरि मोहै। न मोहै दूसरा को है अजब वह रूप धारी है ॥४॥ बिना उस विश्व जननी के अधम की कौन सुनता है। दया हिय धारि भक्तों को वही आनन्दकारी है ॥५॥ पतित जे

पाप के रागी वनावें तिन्ह को अविनासी । लुटावें मुक्ति को काशी वही कमला हमारी है ॥२६॥

समझा असल को जिसने उसको नक़ल न भाया । सूरज के आगे तमका किसने निशान पाया ॥१॥ दिलमें है देखा जिसने कमला की जोति जगमग दुनिया में कोई उसके आंखों तले न आया ॥२॥ ब्रह्मा से लेके जग में जितने हैं जीव धारी । कोई नहीं है ऐसा मोहै न जिसको माया ॥३॥ सोमाया उसकी चेरी कहता है वेद जिसको । मायेश्वरी भवानी कमला है विष्णुजाया ।४। नारायणी को भजिये काया बचन से मन से । श्री सिन्धु कन्यका को कबही कपट न भाया ॥५॥ अन्तर से वासना को विषयों के त्याग दीजै दिल से विषै न छूटी तौ मूंड क्या मुडाया ॥६॥ काशी में बसके कीजै सद्भक्ति अम्बिका की । अब भी तो सोच भाई अब तक वृथा गवाया ॥२७॥

सिन्धु की किशोरि मातु मेरी सुधि लीजि-ये ॥१॥ सुरथसी समाधि ऐसीविधि की सी इन्द्र ऐसी भूपति सुदरशन सी वेगि खबरि लीजिये ॥२॥ निदरि सुर समूह माय तेरे पदगहेउ आय वेगि है सहाय मातु अब न देर कीजिये ॥३॥ अपर देव ते निरास तेरो अब भयोंदास रूप सुधा की पिया विषया किमि पीजिये ॥४॥ काशी पुकार नाइ माथ जोरि हाथ करिके सनाथ मोहि भक्ति दान दीजिये ॥ ५ ॥ २८ ॥

उलटी हो दुनिया की रीति। उलटी हो० ॥ सिन्धु सुता पद भजहि न कबहू विषइन मांहि बढावहिं प्रीति । तन धन धाम सबहिं जो दीनी भूलहिं ताहि कवनि यह नीति। झूठ जगत माहिं सब भूले रखहि नाहीं सत्य परतीति। मातु पिता कमला हरि पदते विमुख होइ बो बडी अनीति। काशी भजु हरि प्यारी के पद बृथा करहु मति आयु वितीति ॥ २९ ॥

भजु मन सिन्धु सुता छबिरासी । जाहि अराधहि सुरपति धनपति वायु अनलयम पाशी । सुरनर मुनि की कौन चलावे जेहि हरि शम्भु उपासी । जाहि सदा योगी हिय ध्यावै निरखहि दीप शिखासी । ताहि भजे समगति दोउ पावै गृह वासी सन्यासी शरण गये रखति जग जननी कोटि जनम अघनासी । जन अपराध कबहु नहि हेरति देति परमगति खासी । वध जौ सकल विश्व करिडारै कोटि जीव दै फांसी । भक्ति सहित श्रीपद भजि सोऊ पावै गति कैलासी । त्रिभुवन माहि अपर कोउ नाही मातु समुद्र सुतासी । कीट पतंगहु काशी बनावति विष्णु शंभु अविनासी ॥३०॥

॥ गजल ॥

सागर सुता की प्रीति सदा दिल में ठानिये । ब्रह्मादि देवकी जननी उस्को मानिये । है आदि शक्ति सिन्धुसुता ब्रह्म रूपिणी । मन बुद्धि

ते परे उसे कैसे बखानिये । माया ने जिसके सृष्टि रची यह सनातनी । मायेश्वरी स्वतन्त्र परा शक्ति जानिये। स्वासा रतन अमोल तेरे हाथ में है आज। कौडी के मोल जाता है कुछ मनमें आनिये । काशी मे बसके भजिये समुंदर किशोरी को । तजिये बिषै को यार मेरी बात मानिये ॥ ३१ ॥

सागर सुताको जी से भुलाना नहीं अच्छा । दुनिया में अपने दिल को लगाना नहीं अच्छा ॥१॥ सब कुछ दिया है सिंधुकिशोरी ने जब तुम्हें । एहसान उसका दिल से मिटाना नहीं अच्छा ॥२॥ आजार दो किसी को न लज्जत के वास्ते । यारो पराये दिल का दुखाना नही अच्छा ॥३॥ जब भगवती ने दी हैं तुम्हे आंखे अक्ल की अंधो की राह में तुम्हे जाना नहीं अच्छा ॥४॥ काशी भजो समुद्र किशोरी को रात दिन । दौलत को जिन्दगी के गवानाहीं अच्छा ॥ ५ ॥ ३२ ॥

दुनिया में अपने दिल को भला क्या लगाइये। सुन्दर गुनानुवाद रमा जी के गाइये ॥ पैदा किया है जिसने जहां में हमे तुम्हें। एहसान उस का दिलसे न अपने मिटाइये ॥ बोझा है तेरे शिर पै गुनाहों का बेसुमार। मुद्दत गुजर गई इसे कब तक उठाइये। दिन रात उम्र तेरी गुजरती है दम दम। बे याद भगवती के न नाहक गवाइये ॥ जिसका मोकाम दिल के महल में है उसको यार। सारे जहां में ढूढने से कैसे पाइये लीजो खबर जरूर हमारी हरि प्रिया। तेरा हुं दास मुझको न एतना भुलाइये दर्शन के वास्ते यह तडपता है रात दिन। काशी को एक बार तो मुखड़ा दिखाइये ॥३३॥

मेरी हरि प्रिया कमला हम को अब मिलो। जाताहुं जान सेजी भला हम को अब मिलो ॥ जब से सुना शोर तुम्हारे जमालका सोज़िश से इश्क के मैं जला हमको अब मिलो ॥ ग़ममें तेरे

वेसालके मैदान हिज्रमें। मुद्दतमदीद तक मैं चला हमको अब मिलो। साबित कदम हुँ राह मुहब्बत में आप के॥ हिर्सोहवासे मै न हिला हमको अब मिलो। काशीकी आरज़ू है यही तुमसे मेरी जान। दिखलावो मुझको अपनि कला हमको अब मिलो॥ ३४॥

कमला के मिलने की है बडी आरज़ू मुझे। मुद्दत से है उसी कि सदा जुस्तजू मुझे मैं चाहता यही हूँ कि देखूं हरि प्रिया। भाती नहीं है और कोई गुफ्तगू मुझे॥ कूचे में अपनेदीजो मुझे ज़रूर दौड़ावो सिन्धुजानाहि अब कूबकू मुझे। करके कृपा दिखावो क़दम अपने हमको अब। कीजेन मुंतशिर कमला सूबसू मुझे काशी तुम्हारा दास हूं रखता हूं तेरी आस। ममूनामिन्नतो का करो मूबमू मुझे॥३५॥

अर्मान दिल में है कमला के मिलाप का। जाता रहा है खौफ जुदाई के तापका॥ मिलजाय

मुझको गर कमला ब्रह्म रूपिणी । परवा है का लकी नहिं ग़म यमके बापका ॥ लाखो पतित तरे हैं रमा के भजे हमेश । कमला के सेवकों को नहि डर है पापका ॥ मेरी गुनाहों पै न धरो ध्यान सिन्धुजा । दिलमें करो विचार तुम अपने प्रताप का ॥ मुझपर दया समुद्र किशोरी करो जरूर काशी गुलाम बन्दा खरीदा है आपका ॥ ३६ ॥

लेहु मोरि सुधि सिन्धु किशोरी । बार बार विनवों करजोरी ॥ अब विलंब कबहु नहिं कीन्ही जब सेवक जन तोहि निहोरी ॥ हमरि वेरि काहे अलसानी । पाछिली वानी भई जनु भोरी ॥ यह लालसा हिये अति वाढी । इन्ह आखिन निरखो सुठि जोरी । सजल जलद दुति हरि दाहिने दिशि । वाम रमा चपला छवि गोरी ॥ वेगि मिलहु मेरी हरि प्यारी । अब वियोग नहि जात सहोरी ॥ काशी सब सुर त्यागि भजत तोहि

और खबरि लैहै मोरि कोरी ॥ ३७ ॥

कबलैहै सुधि मेरी हरि प्यारी । करि करुणा सुनि विनय हमारी ॥ नृपति सुदरशन समर मांहि जब । अति आरत सुधि तोरि सुधारी । सुनत पुकार सिंह चढिधाई । धारि खड्गवैरी गन मारी ॥ महिषासुर दुख दिये त्रिविध विधि । तब सुरगन तव शरण पुकारी ॥ दुर्गा रूप प्रगटि सुरजननी । ताहि असुर दल सहित संघारी ॥ कामक्रोध लोभ मद मत्सर । दंभ कपट तृष्णा दुख कारी ॥ ए बैरीगन मोहिं सतावत । पाहि प्रणात पालिनि हरि प्यारी ॥ करत पुकार बहुत दिन बीते । केहि कारन मोहि मातु बिसारी ॥ काशी सिन्धु सुता पद किंकर । हरहुमातु मम संकठ भारी ॥ ३८ ॥

गजल ।

सागर सुता को भजिये जिसने जगत बनाया ब्रह्मादि देव माता कमला है योग माया ॥

योगी मुनी विरागी धन धाम पुत्र त्यागी । जग-
दम्बभक्ति रागी देवी चरित्र गाया ॥ विधि ईश
शेष हारे पंडित थके हैं सारे । मुनि गन हिये
बिचारे नहिं अन्त उसका पाया। स्वासारतन अजूबा
किसमत से तुम ने पाया । जानी न कदर इसकी
नाहक बृथा गवाया । तुमने गरभ में यारों जगद
म्बके भजनका । कौलो करार करके किसवास्ते
भुलाया ॥ अब भी जो हो सके तो सागर सुता को
भजले । खावेगा सुख से सोई जिस मर्द ने
कमाया ॥ पापी अधम के कारन करुना निधान
कमला । अपनी दयालुता को काशी में है
दिखाया ॥ ३१ ॥

भजो सागर किशोरी को तुम्हे जिसने बनाई
है । छिपा है ब्रह्म माया में प्रगट महिमा दिखाई
है ॥ जिसे आतम कहे ज्ञानी चरित नाहिं वेद
नेजानी परा शक्ती महारानी बही हरिकी लो-

गाई है ॥ लसै मुख चन्द्र की जोती भरी है मांग में मोती । चकित मति वरनते होती महा छबि को बढ़ाई है ॥ जिसे श्रुति नेति कहि थाकी थकित मति ब्रह्म बनिता की । लखी छबि मातु कमला की अजब मुख की निकाई है ॥ दयाकरि विश्वजननि ने पतित पामर उधारन की । लखोनिर्वान काशीमें रमाजी ने लुटाई है ॥ ४० ॥

चलु मन बेल विपिन सुखरासी । जहाँ वसति जग तारिनि कमला हरि हिय धाम निवासी ॥ आदि शक्ति त्रिभुवन की माता विधि शिव विष्णु उपासी ॥ जाहि भजे उत्तम गति पावहि योगी जती उदासी ॥ निजदासन कह सोइ हरि प्यारी सुखदा कल्पलतासी ॥ जन अपराध छमा करि जननी जनम जनम अघनासी ॥ देति परम गति मुनि जेंहि जाचत काटि मोह भ्रम फासी ॥ हिय निज धाम समुद्र सुता को जह वसु दीप

सिखासी ।। सोइ सेइये जँह पाइये कमला क्या मथुरा क्या काशी ।। ४१ ।।

विहरति फुलवरिया सिन्धु लली । एक हाथ हरि कांधे धरिकै दूजे फिरावति कंज कली । फुल निके भूषन अंग राजित सारी ललित सोहाति भली ।। चंपा वकुल रचित सुठि वेणी बिच बिच लागी अनार कली ।। निज कर रचि रचि कुसुम विभूषन पहिरायो है हरि भाँति भली । मृदु मुसुकाति मोह करिबाँकी हरि की सुधिबुधि आजु छली । काशी मान कमल निहारति आवति सिन्धु किशोरी चली ।। ४२ ।।

गज़ल ।

गरजानहूं जुदाई में उसके तो क्या करूं । कबतक फेराक सिन्धुसुता कासहाकरूँ आतिशसे इश्क के मेरा सीना सुलग गया मिलनेकी इश्तियाक में कबतक जलाकरूँ । हूँमैं मरीज़ इश्क समुन

दरकिशोरीका । इस मर्ज़ें लादवाकी मैं क्योंकर दवा करूं ॥ मुश्ताकहूं विसालका उसके मै इस क़दर । गर वह मिलै तो जानको अपने फिदा करूं ॥ वादा है जांनिसारिका मुझको मिले अगर । काशी में अपने वादे को मैं भी बफा करूं ॥ ४५ ॥

कमला की यह अदभुतरीति । योगी मुनिगन तप करि हारे पतितन पर बहुराखति प्रीति । परम दयालु रहति दासनपर सुमिरत हरति सकल भवभीति । बाल युवा बिनु भजन बिताये बृथा आयुमति करहु बितीति । भजन बिना नहीं उचित बितैवो पाय मनुज तनपरम पुनीति । काशी सेइ रमा पद पंकज बाजी लेहु आपनी जीति ॥ ४४ ॥

भजन ।

नारायणी रमा हरि बनिता सिन्धु सुता को ध्यान धरो । कमल विलोचनि हरि मनरोचनि

संकठमोचनि को सुमिरो। जलधि किशोरी हरी की जोरी तनगोरी सब खोरि हरो घनश्यामा पुरुषोत्तम वामा पूरन कामा भजन करो। सुरमुनि रंजनि खलदलभंजनि दानव गंजनि चरण परो। बिनु हरि प्यारी सिन्धुकुमारी भजे न एको काज सरो। भगवति पद्मा गुन गन सद्मा मोतिन जाकौ मांग भरो। सो छबि दासी जग उर वासी काशीको सब ताप हरो॥ ४५॥

जलधिलली छबि नयन वसीरी। दृग कंजन अंजन मनरंजन ललित अधर बिच मधुर हँसीरी। चन्द्र सहोदरि चन्द्र वदन लखि होत मंद दुति शरद शशीरी। कुंडल श्रवन कीटशिरराजित कटि कंचन किंकिनी कसीरी। वर अरु अभय युगल कर पंकज वेदी भाल विचित्र लसीरी रमारूप रविभात निहारत काशी हियनलिनी विकसीरी॥

ललित वदन लखि जलधि लली के। अब न आंखितर आवत कोई भये आजु पूरन

विधु फीके। निरखि मुकुन्द प्रिया दसनन को दांत कुन्द भये कुन्द कली के। बदन सरोज मांहि जुगलोचन मधुलोलुप जनु सुवन लली के। मुक्ताहार नाभिसर के तट उपमा लहत हंस अवलीके पीनपयोधर रुचिर मनोहर मिटत ताप निरखे त्रिवली के। काशी भजि कमलापद पंकज नसहिं कलुष कलिकाल बली के ॥४७॥

कमला हरि प्यारी ले खबरिया मेरीरे। मोहि ले बचाय मेरी सिन्धु की लली मो कँह कलिकाल कीन्ही बरजोरीरे। कैसे के बखानो तोहि हे हरि प्रिया महिमा अतुलित मति मोरी थोरीरे सजल जलद छबि विष्णु संगमें चपलाके समान कमला सोहै गोरीरे। परम छबीली रमा को भज काशी जाको सुरपति हरिहर निहोरीरे ॥ ४८ ॥

कवन दिन कमला ऐहैरी। मोरी सकल ढिठाइ छमि त्रिभुवन माई कब मेरे ढिग आई

सुधि मेरीलैहैरी । सुनि बैन सुखदाई कब श्रवन जुडाई देखि मुख की निकाई कब दृग सुख पैहैरी । सुनि रूप की बड़ाई मोहि काहु न सोहाई कब मोहि अपनाई निज दरस दिखैहैरी । मोरी बीती लडिकाई गई वृथा तरुणाई अब आई है बुढाई कब मोहि अपने हैरी । तजि मन कुटिलाई सब सुर को विहाई भजि हरि की लोगाई कब काशी बलि जैहैरी ॥ ४१ ॥

मेरो मन मोहि लई सिन्धु की किशोरी । भूषन भूषित सुअंग लखि छबि लाजे अनंग सोहति घनश्याम संग दामिनि द्युति गोरी । सुन्दर कमला स्वरूप अमित कान्ति गुन अनूप बरनैं मुनि ब्रह्मरूप आनँदमय जोरी । करुणानिधि शीलपुंज धीरकर जुगल पुंज निरखि मुखसरोज मंजु शशि लजि त्रिन तोरी । विमल चरित गुने उदार महिमा अतुलित अपार वेदहु पावै नपार

मोरी मति थोरी । नाशिनि दारुण क्लेश कोमल चित जो हमेश उपमा पाये न शेश शारद भई भोरी । शुभ गुन वररूप धाम शोभा छबि अतुलग्राम सेवक नयनाभि राम मोहति बरजोरी । पूजिहि मन आस सही मेरो अभिलाख यही काशी हियधाम बसै कमला हरिजोरी ॥ ५० ॥

या जग कमला जीको राज । जासु अधीन चराचर स्वामी तीनि लोक महराज । विधि महेश जाके पदवंदहिं सकल देव सिरताज॥ कमला चरन सरोज अराधहिं नितिधन पति सुरराज । वरनहि जासु अलौकिक महिमा मुनि गन सहित समाज मनि मानिकको मोल बढायो सस्तो कियो अनाज विनुसेवा त्रिभुवन को पालति रमा गरीब निवाज ॥ परिहरि आस अपर देवन की साजि भक्ती को साज । काशी हरि प्यारी पद भजिये त्यागि जगत के काज ॥ ५१ ॥

॥ झूलन ॥

झूलति झमकि समुद्र किशोरी हरि संग परम सोहाई हो । नव सज साजि सिंगार मनोहर भूषन कुसुम बनाई हो ॥ झुकि झुकि युवति झुलावति झूला मुदित मधुर धुनि गाई हो । सजल जलद छाये नभ मंडल दामिनि दुति चमकाई हो ॥ बूंद फुहार भूमि त्रिन संकुल शोभा अधिक बढाई हो । सुरतिय युथ्थ झुलावन आई जनु सरिता वढि आई हो ॥ भवसागर को पार तरत मुनि जासुललित गुन गाई हो । तासुरमा छवि निरखत काशी बार बार वलि जाई हो ॥ ५२ ॥

झूलत श्री बैकुंठ बिहारी सहित समुद्र कुमारी हो । सजल जलद जनु हरितन शोभा दामिनि छबि हरि प्यारी हो ॥ उमा सचि वानी पिक कोकिल हरषित सब सुर नारी हो । शिव

सनकादि बखानत महिमा दादुर रट श्रुतिचारी हो ॥ नारदादि मुनिगन केकी जनु नाचहिं मेघ निहारी हो । घन घमंड छबि नभ सोहै बरषारितु सुखकारी हो ॥ जासु रूप गुन अमित बखानत शारद की मतिहारि हो । काशी मुदित मुकुन्द पियाछबि निरखि जात बलिहारी हो ॥५३॥

देखो झूलति आज समुद्रसुता छहिया अति सीतल कुंजलता । बिधि शम्भुनुतानिज भक्तहिता करुणा सहिता विपदा रहिता ॥ महिमा अमिता मघवा नमिता दुति देखि लजाहिं सदा सविता । जगदीश प्रिया जगकी जननी हरिकी बनिता छबिकी सरिता ॥५७॥

कमला हरि झूलत प्रेमभरे श्रुतिकुंड लसी सकिरीट धरे । दोउ सोहत दिब्य सिंगार करे बिलसै बनमाल दुहून गरे ॥ चपला लपटी जनु वारिदसो उपमा यह सुन्दर जानि परे । काशी

निरखे छबि दंपतिके कलिकेशव पाप कलाप हरे ॥५५॥

दारिद्र हरनि मुदकरनि मातु जगदीश प्रिया हरिबाला । ससिबालभाल लोचन बिशाल, गरे लसत जाहि मोतिनको माल, गति लखि लजाहि करिवर मराल, बानी सुठि मृदुल रसाला ॥ जनको कलेश नाशति हमेश, निति भजहि जाहि बिधि हरि महेश, पाये न अन्त चहुंवेद शेष, महिमा विचित्र सुबिशाला । हरिये कराल कलिकाल जाल । छमिये कुचाल ममजानि बाल, करिये निहाल मोहि विष्णुबाल, कोमल चित दीन दीन दयाला । काशी सहित तजि सकल काज, बिनवहि जेहि धनपति देवराज, निति ध्यान करहिं जेहि मुनिसमाज, द्विजराज धरे मृगछाला ॥५६॥

॥ इति कमला आरती सम्पूर्णः ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ कवित रत्नावली लिख्यते ।

सवैया ।

हरिकी वनिता पयसिन्धु सुता महिमा अमिता करुणा सरिता ॥ जनकी प्रतिपालिनी दानवघालिनि श्रीबनमालिनि देवहिता ॥ पय सागर नन्दनि पाप निकंदन मुनिवर नन्दनि देवहिता ॥ काशी हिय धाम बसो बसुयाम निरन्तर, हे जन कल्पलता ।

वेद पुरान बखानत जाहि प्रभाव अनन्त अनंत न जाने॥ देव प्रजेश रमेश महेश सुरेशहु जासु अराधन ठाने ॥ ताहि विहाय सहाय न और विचार भजे हिय मांहि सयाने ॥ काशि सोई जगमातु रमा पयसिन्धु सुता कर मांहि बिकाने ॥२॥

राखि जटा करि सिद्ध छटा कोउ अंग वि-
भूति रमावत कोउ ॥ ऊरध पुंड लगाय लिलार
अचारहि धारि अचारज होऊ ॥ वस्त्र कषाय रंगाय
कोऊ हमरे मनमांहि सोहाय न सोऊ ॥ काशी
सदा कमला पद किंकर लेवे को एक न देवेको
दोऊ ॥३॥

कलिकाल कराल विहाल कियो मुनिज्ञान
विशारद जांहि ठगाई ॥ धर्मको लेश नही जगमें
मद कामकला अति से अधिकाई ॥ यमदूत
जबै यमराजपुरी गहि लेइ चलै न लहै चतुराई ।
काशी तहँ केवल छीर समुद्र सुता बिनु और
न होय सहाई ॥४॥

जप योग समाधि क्रिया ब्रत संजम होय
नहीं कलिकाल बली है ॥ कामिनि तासु सहाय
बड़ी मुनि जोगिहि जीनि वलात छली है ॥
यहि अवसर त्यागि सबै जगको जगदंब भजो

तो उपाय भली है ॥ काशी भवसिन्धु उतारनको समरत्थ अकेलि समुद्र लली है ॥५॥

दुख संकठ नाश करै नहिं और तपोतप तीरथ मांहि अटै ॥ शशि सोदरि मातु बिना भजि और कहूंनहिं काहूको ताप मिटै ॥ भव बंधन जीव बंधाई गयो जगदंब कृपा बिनु नाहिं छुटै ॥ काशी हियमांहि बिचारि सदा पय सिन्धु सुता शुभ नाम रटै ॥६॥

महिषा सुरपाय महा बरदान गह्यो अभिमान जहानहिं जानो ॥ जीतिलई अमरावति को सो कथा जगख्यात कहालों बखानो ॥ बैर किये जगदीश्वरिते नहिं देर लगी छनमांहि विलानो काशी जगकी यह रीति सदा जो फरै सो झरै जो बरै सो बुतानो ॥७॥

बिन्दु बिहीनहु बानीको बीज जपै द्विज धीर महा सिधि पाई ॥ ताहि बखानि सकै कबि कौन

जो नाम रमा की सदा रटलाई ॥ सुमिरे जेहि पातक कोटि नशाय सकै कहिको कमला प्रभु-ताई ॥ काशी लखो जननी की दया जँह कीट पतंगहु शंभु बनाई ॥८॥

ताकी पराय दरिद्र सबै हिय धारिदया कमला जेहि ताकी ॥ कोटिन काम निहारि लजैं दुरिजाय अकास प्रभास-विताकी ॥ शंभु सदाहिय ध्यान करैं सबके उर जोति प्रकाशित जाकी ॥ काशी सोई अब सिन्धु तरे जेहि प्रीति सदा पय सिंधुसुताकी ॥९॥

निशि वासर भोग करै विषया कबहूं नहिं ताहि सो पेट भरै ॥ नहिं छूटत है भव वंधन ते केतनोइ उपाय अनेक करै ॥ विनु देवि कृपा नहिं छूटि सकै भव जाल विशाल बंधाइ मरै। काशी प्रनरोपि कहै सुत को जग मातु विना दुख कौन हरै ॥१०॥

विषया लपटाइ रह्यों जगमें कमला पद प्रीति न चित्त धरै ॥ यहि कारन मुक्ति लहै नहिं जीव सदा भव बंधन माहिं परै ॥ बिनु सिन्धु सुता पद प्रीति गहे कबहूं भव सागर नाहिं तरै ॥ काशी प्रनशेपि कहै सुतको जग मातु विना दुख कौन हरै ॥११॥

जगदंब बिलंबहि त्यागि अबै चितवो निज दासहि नैन के कोरे ॥ विधि ईश सदा जेहि सीस नवावत ताहि वखानि सकै कबि कोरे ॥ ताहि भजे सुख होय महा हम सत्य कहैं लिखि कागद कोरे ॥ काशी सोई भव सिन्धु तरे कमला पद प्रीति सदा जिन कोरे ॥१२॥

जासु कटाक्ष बिलोकत लोकप देव मुनि सहिपालति जोरे ॥ जाहि सदा हिय ध्यान करै विधि माधव ईश उभय करजोरे ॥ मातु कृपा निधि सागरनन्दनि विष्णु प्रिया पद कंज

भजोरे ॥ काशी पुकारि कहै सब सों विषया विषरूपहि वेगि तजोरे ॥१३॥

निगमागम शास्त्र पुरान सबै मुनि ज्ञान विशारद व्यास कहे ॥ माया वशजीव भुलाय रह्यो निज आतम को भवताप सहे ॥ जन शोक निवारिनि मातु रमा पय सिन्धु सुताहि विसारि रहे ॥ काशी तै मंदगवार महा कबहूं निरबानहिं नाहिं लहे ॥१४॥

वेद पुरान बखानत जो सबही अवलोकि इहै मतिधारी ॥ त्यागि सबै व्यवहार सदा गहि भक्ति अनन्य भजो हरि प्यारी ॥ जे नर मूढ भजैं नहिं देवि सहैं दुख दारुण तेई अनारी ॥ काशी सोई भव सिन्धु तरे जेहि सिन्धु सुता गहि पार उतारी ॥१५॥

भजु मातु दयानिधि सिंधु सुता निति धारि हिये अति प्रीति घनेरी ॥ शंभु रमेश दरिद्र

महा जसही तिनते कमला मुख फेरी ॥ सोई रमा हिय धारि दया छमिहैं सब चूकि कृपा करि तेरी ॥ काशी कहँ एक रमा को भरोस सहाय सोई करिहै तजि देरी ॥१६॥

काहू की मोहि नहीं परवाहि सहाय जबै जग मात है मो रे ॥ जो कमला हरि की बनिता करुणा सरिता न कहूं मुख मोरे ॥ जाहि विरंचि महेश गणेश सुरेश सबै बिनवैं करजोरे। काशी पुकारि कहै जगमें कमला जब राखिहै मारिहै कोरे ॥१७॥

लखि सिन्धु सुता छबि की सरिता नि-मिषै दृग अंचल त्यागि दई ॥ भुज चारि बि-भातस नाल सरोज उभय कर में युग कंजु-लई ॥ कर पंकज दोय अभय बरदायक नैन चितौनि की रीति नई ॥ काशी हिय धाम बसो बसुज़ाम रमा जय पालिनि मोद मई ॥१८॥

गोल कपोल विराजित लोल अमोल सुकुंडल मेलनकी ॥ छवि वरनिन जात बिभाति प्रभा अति मोतिन माल अमोलन की ॥ शशि सोदरि रूप अनूप लसै छवि चित्र रमा दृग खोलन की ॥ काशी सदा बलि जात समुद्र सुता कमला जी के बोलनकी ॥१९॥

शतवरष को आयु प्रमाण किये निशि सोवत ताहूमें अर्ध बिताये ॥ बाल जरा महँ आधी गई पुनि अर्धहु रोग वियोगहि छाये ॥ शेष बिताय दई जगमें नृप सेवत कष्ट अनेक उठाये ॥ काशी बिचार करै मन मैलहि मानुष जन्म कहा सुख पाये ॥२०॥

जौलों है स्वस्थ शरीर अरोग ग्रसीन ही जब लागि तोहि बुढाई ॥ जौलों अशक्त भई नाहि देहहु जब लग क्षीण भई नहिं आई ॥ तौ लगि काशी उपाय यही भजिये सुख हेतु रमा

जग माई ॥ जब घर आगि लगी धुधुवाय न कूप खोदाय न जाइ बुताई ॥२१॥

स्वारथ लागि रहे तेरे साथ नहीं परमारथ मांहि सहाई ॥ जीव अकेल पयान करै गृह संपति साल दुशाल बिहाई ॥ संग कुटुम्ब सखा पितु मातु सुता सुत बंधु कलत्र नचाई ॥ काशी तजो जग को वेवहार भजो हरि प्यारी रमा गुनगाई ॥२२॥

जो जगमें तव मित्र लखाय बिचार किये सबही रिपु तेरे ॥ एक समुद्र किशोरी बिना हित नाहि लखाय चराचर हेरे ॥ स्वारथ लागि कुटुम्ब सबै करि झूठो सनेह सदा तोहि घेरे ॥ काशी प्रसाद विहाइ सबै भजु हरि बनिता अबही तो सबेरे ॥२३॥

जौलो समर्थ रहो तन मै करि कोटि कुकर्महि द्रव्य कमायो ॥ मन माहि रही मन की

सब ही जब वृद्ध भयो कोउ काम न आयो ॥ गात गयो सिथिलाइ महा सुत बंधुनते सुख रंच न पायो ॥ काशी अजौ नहि प्रीति करी कमला पद जो तोहि पोसि जियायो ॥२४॥

गात अशक्त भई गति भ्रष्ट न सूझत आंखिन न कान सुनाई ॥ दांत कि पांतिनही मुख में बहुलार बहै कफकी अधिकाई ॥ कष्ट जरापन को न कहाय जहा सुतहू न करै सेवकाई ॥ काशी विचारि विलम्ब तजो जगदम्ब भजो न तो आई बुढाई ॥२५॥

कांपत अंग नहीं कोउ संग भई गति मंद ननैन सुझाइ ॥ आरत सबहि पुकारि रहै न सुनै कोउ बंधु कुटुम्ब लोगाई ॥ आदर तासु न कोउ करै यहि भांति ग्रसै जेहि आइ बुढ़ाई ॥ काशी सहाय न ताहि समय कमला जगपालिनि मातु बिहाई ॥२६॥

मान सरोवर तीर मराल महाजलते मुकुता जिमि काढ़े ॥ भव जल बूड़त जीवन को जगदम्ब उवारि लई भय वाढ़े ॥ करजोरि महेश धनेश निहारहि जासु कटाक्ष निरन्तर ठाढे ॥ काशी कहैं एक सहाय सोई पय सिंधुसुता कमला दिन गाढे ॥२७॥

शक्ति चरित्र करो निति गान सुनो नहि आन कथा मनलाई ॥ केवल शक्ति को ध्यान धरो निशि वासर शक्ति की भक्ति दिढ़ाई ॥ और सो मोहि नही कछु कामरमापय सिंधु किशोरी विहाई ॥ काशीप्रसाद की टेक यही भजिये कमला सब ही विसराई ॥२८॥

तजिकै ममता भजुहरि वनिता मुनि भक्त हिता जेहि गावतु हैं ॥ पयासिन्धु सुता महिमा अमिता विधि हर सविता जेहि ध्यावतु हैं ॥ सोई ब्रह्म प्रिया प्रकृती अजया सबही निज हाथ

नचा वतु है ॥ माया वश देव मुनिन्द्र सबै सोइ होइ दयालु छोड़ावतु हैं ॥२९॥

चहुवेद पुरान ऋषी सबही जगतारिनि को गुन गावतु है ॥ विधि हरिहर बल जगमातुहि के सिरिजत पालत विनशावतु है ॥ जगदम्ब समान दयालु कोऊ त्रिभुवन महँ दृष्टि न आवतु है ॥ काशी नरकीट पतंग सबै निरवान समानहि पावतु है ॥ ३०॥

दस महाविद्या के दस कवित्त।

काली ॥ १ ॥

मातु दयानिधि जाहि भजै विधि धारि दया सुर मुनि प्रतिपाली ॥ शव शिव हृदय विराजति हरखित शेवहि कोटिन योगिनी आली ॥ पालन हेतु सोई जन पालिनि दानव वृन्द अनेकन घाली ॥ काहेविलंब करो जगदीश्वरि मोपर कृपा करहु अब काली ॥३१॥

तारा ॥ २ ॥

जासु प्रतक्ष चरित्र विचित्र महत्व पवित्रसु कीर्ति उदारा ॥ जापदधूरि विरंचि बटोरि बनावत अविकल श्रृष्टि अपारा ॥ जानि प्रताप अलौकिक ढोवत शेष सदा शिर पै महि भारा ॥ काहे न धारि दया प्रति पालहु सेवक हू जन-तारिणि तारा ॥३२॥

॥ षोड़शी ॥ ३ ॥

जासु प्रताप अनन्त बखानत शेश महेश गनेशहु लाजै ॥ प्रात समै सविता की प्रभा जिमि तैसोइ श्रीललिता छबि छाजै ॥ कर पंकज शायक चाँप लिये जुगहस्त अभय बरदान विराजै ॥ सो त्रिपुरा जगदंब पराभव ताप हरा निति मोहिनि बाजै ॥ ३३ ॥

भुवनेश्वरी ॥ ४ ॥

सुनि श्रवन सुजस शरणागत को निति

सेवक पालिनि तोहि पुकारों ॥ तोहि विहाय सहाय न माय कोऊ भुवि मंडल मांहि हमारो ॥ बूडत हौं भवसागर माँहि कृपा करिकै अब वेगि उबारो ॥ काहे विलंब करो भुवनेश्वरि केवल मोहि भरोस तेहारो ॥ ३४ ॥

भैरवी ॥ ५ ॥

भैरवि भैरव संग सदा विहरै कर पात्र कपाल लिये ॥ भरि आनँद दंपति नृत्य करै शमशान सदा मद पान किये ॥ निज सेवक के भय नाश करै जन साधक को सब सिद्धि दिये ॥ सो जननी भव भीति हरै करुणारसको निति धारि हिये ॥ ३५॥

छिन्ना ॥ ६ ॥

मातु दयानिधि छिन्न शिरावन मे लखि प्यासी सखी अति प्यारी ॥ निज हाथ सो काटि कै आपनो माथ सुधारस धार गरे ते निकारी ॥ एक लई अपने मुख मैं जुग डाकिनी वर्निनीके

मुख डारी ॥ ऐसी दयालु न और कोई जैसि छिन्न शिरा गिरिराजकुमारी ॥ ३६ ॥

धूमावती ॥ ७ ॥

काक पताक धुजा फहरात मनोहर गातव खानि न जाई ॥ धूम गिरिंद समान विभाति प्रभा सरसाति महाछविछाई ॥ मणि भूषन अंग सजे रथ मै जुग काक लगाइ के हाँकि चलाई ॥ धूमावती जेहि ध्यावैं जती मेरो दुःख दरिद्र हरै जग माई ॥ ३७ ॥

बगला ॥ ८ ॥

पट पीत मनोहर अंग लसै बिलसे मणि भूषण पीत सबै ॥ पुनि पीतही माल सोहाय गरे अनुलेपन पीतही अंग फबै ॥ रिपु कंठहि कुंठित वेगि करै जन सेवक ताहि पुकारै जबै ॥ बंगला हिय धारि दया सोइ मातु हरै सब संकट मोर अबै ॥ ३८ ॥

मातंगी ॥ ६ ॥

विषयारस त्यागि मतंग सुता पदकंज भजो जाके हाथ सरंगी ॥ महिमा निज गान करै निशिवासर नैन निहारी अजाहि सुरंगी ॥ जग मै जगदंब बिहाय कोई नहि पुत्र कलत्र अहैं तेरे संगी ॥ मन मत्त मतंग को सूधो करै सोइ मातु मतंग कुमारी मतंगी ॥ ३९ ॥

कमला ॥ १० ॥

जासु महेश सुरेश धनेश गणेश हमेश अराधन ठानी ॥ नाम लिये अघपुंज नशैवर मुक्ति लहै जेहि जाचत ज्ञानी ॥ ध्यान करै हिय जोगि सदा महिमा वरनै श्रुति जासु बखानी ॥ अंब सोई अवलंब हमे प्रतिपालति जो कमला महरानी ॥४०॥

घनाछरी ॥

कमला महरानी परब्रह्म पटरानी सुर मुनि विज्ञानी गति पावै गुन गाइ कै ॥ अमित प्रभाव

जासु सकत बखानि नाहि शारद गनेश शेष रहत लजाइकै ।। अवलों कहू विलंब कीनी जगदंब नाहि सेवकहि पालि सुनि टेर बेगि धाइकै ।। काशी पुकार करैं देर भई मातु अब ऐसही बितैहो की चितैहो चित लाइकै ।।४१।।

मधुकैटभ नाश हेतु बिधि की पुकार सुनि प्रगटि तुरत राखी बिधिहि बचाइकै ।। असुर हयारि शुंभ रक्त बीज चंड मुंड सुरहित लागि बधी समर मचाइकै ।। जब निज दासन पै भीरि परी मातु तुरत किये निशोच विविध उपाइकै ।। काशी पुकार करै देर भई मातु अब ऐसही वितैहो की चितैहो चितै लाइकै ।। ४२ ।।

कीधों सिथिलाई मानो आइ बुढाई तोहि कीधों रही वानि वह पाछिली भुलाई के ।। कीधों कलिपापिन असंख्य तोहि घेरी राखी अधम उधारनि भीरि रही अरुझाइकै ।। कीधों

डरानी मम पातक समूह देखि किधों रही आपनो प्रताप बिसराइकै ॥ काशी पुकार करै देर भई मातु अब ऐसही बितैहो की चितैहो चितलाइकै ॥४३॥

नृपति सुदरशन कहँ घेरी रिपुसैन जब पहुची सहाय हेतु सिंह चढि धाइकै ॥ तासु रिपुदल विनाशि दीनी अखंड राजसेवक प्रति पाली जग सुजश वढाइ कै ॥ मेरी वेरि काहे अलसानी कमला भवानी कारन कवन जासे रही बिरमाइकै । काशी पुकार करै देर भई मातु अब ऐसही बितैहो की चितैहो चितलाइकै ॥ ४४ ॥

जासु ओर चितै मंद होति रवि ज्योति प्रात लजै खंजरीट लखि लोचन विशालहै ॥ हीन शुक तुंड छवि नासिका निरखि जासु करिबर लजाँहि अवलोकि वह चाल है ॥ साँझको चकोर मुख चन्द देखि पावै मोद विकसै निहारि अरविन्द प्रातकाल है॥ माधव दुलारी सोइ जलधि कुमारी मातु कर निति करति निज सेवक निहालहै॥४५॥

जलधि कुमारी अघ नाशकी करनि हारी जग हितकारी तोहि भयते उबारिहै ॥ अगम अपार भवसागर ते बेगि तोहि माधव दुलारी गहि पारही उतारिहै ॥ सोई हरि प्यारी क्षीर सागर कुमारी जाहि सेउ त्रिपुरारी सब दुरित निवारिहै॥ काशी परतीति मन माहि गहि ताहि भजु राखैं जग जननी तब कौन तोहि मारिहै ॥ ४६ ॥

जासु नाम लेत दुख दारिद बिनाश होत सुमिरि प्रताप कंपमान कलिकाल है ॥ जुग कर पंकज जुगल कर बरा भीति केशर की खोरि वर सोहै जासु भालहै ॥ दीन छवि हीन शशि होत मुख जासु देखि लखि गति मंद बहु लजत मरालहै ॥ धारिहिय करुणा बिशाल निज दाशन पै आजु अनुकूल जगमूल हरिबाल है ॥४७॥

जलधि कुमारी छवि जाउँ बलिहारी संग सोहत मुरारी तन ललित दुकूलहै ॥ वर अरु

अभय विराजत जुगल कर अपर लसत जुग पंकज को फूलहै ॥ त्यागि नंदन विलास आँनद वन करि निवास पामरहु देति मुक्ति दाहि अघतूलहै ॥ जाग्रत सुषुप्ति स्वप्न त्रिगुन त्रिशूल मानो काशी तुरीय परा शक्ति जगमूलहै ॥ ४८ ॥

त्यागि जग जननी सरोज पद विषय माहि करै अनुराग वर तासु वडिभूल है ॥ नाम लेत जासु मुक्ति पावत अधम खल जासु पद ध्यान धरे नाशै भवशूल है ॥ जौनि ग ति योगी निति जाचै वहुयोग साधि सोई मातु देति करि पापनिरमूल है॥ परा शक्ति देति मुक्ति जीवहि समान निति काशी तुरीय जहँ त्रिगुन त्रिशूलहै ॥ ४९ ॥

देखि मुख चन्द आनन्द छबि कंद कब सकल कलिकलुष कलाप ताप टारिहौं ॥ कवधौं विलोकि कमनीय रमा रमन संग रमा रमनीय तन सुधिहि बिसारिहौ ॥ कब हरिवामा छविधामा पद कंजु

मंजु हरि पद सरोज संग निजकर पखारिहौ ॥ कौने दिन कृपा सिन्धु करुणा निधान दोऊ कमला रमेश निज नैनन निहारिहौं ॥ ५० ॥

सागर कुमारी भव भीतिकी हरनि हारी बिनती हमारी हरिप्यारी सुनि लीजिये । तेरे विनु माय नहि अपर सहाय मोहि होइ के कृपाल अब निहाल मोहि कीजिये ॥ त्यागि तव भक्ति सुधा दास तेरे कहाय विषय विषरूप माय कैसे कै पीजिये ॥ काशी पुकार सुनि दरश दिखाय आय मोहि अपनाय माय भक्ति दान दीजिये ॥५१॥

सवैया ।

सोई प्रवीन वडो बुधि मान सुपंडित ज्ञान बिशारद सोई ॥ त्यागि सबै विषया विषरूप भजै कमला पद पंकज जोई । शक्ति प्रताप प्रतक्ष सदा सव जानु जहान नही कछु गोई । एक समुद्र किशोरी विना परमारथ आवत काम न कोई ॥ ५२ ॥

॥ कुंडलिया ॥

मेरी विनती सुनि अब जलधि सुता जगमाय। केहि कारण मम सुधि अहो जननी रही भुलाय। जननी रही भुलाय निपट बालहि बिसराई। कोमल हृदय कठोर भयो किमि जानि न जाई। काशी सबहि बिसारि गही शरणागत तेरी। तुम बिनु सिन्धुकिशोरि और सुनि है को मेरी ॥५३॥

तव बिलंब कीनी नही जब विधि टेरे तोहि। मधुकैटभ भै त्रासित अति वड अचरज हियमोहि। वड अचरज हिय मोहि तबहु नहिदेर लगाई॥ महिषासुर वध हेतु सुरन जब तोहि मनाई॥ शुंभ निशुंभादिक असुर दुखित किये सुर मुनिहि जव। टेर सुनत आरत हरी तुरित प्रगटि जगदंब तव॥५४॥

॥ सवैया ॥

शिर मानिक क्रीठ लसै अति सुन्दर कुंडल की झलकानि भली। अलकानि कपोलनि पै

घुघुरारि सुदंत कि पंगति कुन्दकली । सुधिजाय भुलाय विलोकि छटा तिहु ताप नशाय लखे त्रिवली । जुग कंज अभै वर राजित हाथ बिराजति छीर समुद्र लली ॥ ५५ ॥

बिधि की उपासी ध्यावैं शंभु अविनासी जौनि जगत प्रकासी सोइ कमला छबि रासी है ॥ विद्युत छटासी घनश्याम उरवासी, जोहि सेवै नित पासी भक्त सुर तरु लतासी है ॥ जोगी औ उदासी चित की कलासी लखैं सेवक अघनासी भुक्ति मुक्ति देति खासी है ॥ मातु इंदिरासी तिहू लोक माँहि और नाहि माया जासु दासी ताहि सुमिरै जन कासी है ॥ ५६ ॥

कुंडलिया ।

सब अपराधहि मै करेउ हे जग तारिनि अंब । तीरथ फिरि जानेउ नहीं जग व्यापिनि जगदंब । वानी पराभवानि तासु अस्तुति बहुगायो । मन बु-

धिते जो परातहि निज हिय मैं ध्यायों। अजाजनम बहु मानि शरण तेरे आयो अब। छमा करहु गहि दया मातु मेरे पातक सब॥ ५७॥

सदन करुना के कंज शोभा सरिता के जाहि एक बार ताके धन्य ताके पिता के हैं। इन्द्र ब्रह्मा के वर विभव कटाछ जाके बरनै छवि वाके अस बुद्धि बल काके हैं॥ जैसे रमा के है विलोचन दरिद्र मोचन ऐसे न उमा के न सचीन शारदा के हैं॥ काम मद छाके धाम ब्रह्म के कलाके ग्राम अमित दया के नैन वाके कमलाके हैं॥५८॥

कीधों यह धाम अभिराम मुक्ति काम हू को कीधों फल ललितए विद्रुम लताके हैं॥ कीधों कामधेनु भक्त कामना को पूरै निति कीधों कंजु मंजु लावण्य सरिता के हैं॥ कीधों अमल दल जुगल कमल के ए कीधों द्वै मुकुर प्रभात सविता के हैं॥ पावन सुरेश शमन भावन पुनीति किधों चरन सोहावन रमेश बनिता के हैं॥५९॥

पावस की कवित्त ।

चढ़ि के अटा पै छटा देखि के घटा की आजु हिये अकुलात विरह सागर ललाम की । लखिकै व कालिका कपालीहू के सुने बैन आवै नहि चैन सुधि तनकी न धाम की ॥ पाई वरसात हिय ताहि सरसात प्रेम आठो जाम रहै याद शोभा हरियाम की । चपला विलोकि सुधि होति द्युति कमलाकी देखि घन श्याम सुधि आवै घनश्याम की ॥ ६० ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीहरिवल्लभायैनमः ।

अथ शक्ति भक्ति तरंगिनी लिख्यते।

दोहा ।

वन्दौं मंगल दाइनी मंगल मूरति माय ।
मंगल हित श्री मंगला कमला होहु सहाय॥१॥
ध्यावहि जासु सरोज पद शेष महेश गनेश ।
अनल अनिल देवेश रवि शशि विधिधनद हमेश॥
बिधि हरि हर जानै नही जासु प्रभाव अनन्त।
ब्रह्म बखानहि जाहि मुनि महिमा वरनैं संत ॥३॥
जाकी मायाते रचित प्रगट अखिल संसार ।
आत्मरूपिणी निर्गुणा तासु सकल विस्तार ॥४॥
जासु शक्तिलहि सुर असुर शक्तिमान सब होई ।
ता सो हीन अशक्त जग काज सरै नहि कोई ॥५॥
सोई निगुना शक्ति पुनि त्रिगुन धारि पश्चात।
रचति सकल ब्रह्मांड को जो जग प्रगट लखात ॥६॥

सृष्टि शक्तिलहि जासु विधि विरचत सकल जहान।
पालन शक्तिहि पाइ हरि पालत जगत महान ॥७॥
नाश शक्तिलहि तासु पुनि रुद्र विनासत सोइ।
प्रलय काल या विश्वको सकल प्रगट नहिगोइ॥८॥
धारन शक्ति महील ही दाहक शक्ति हुतास।
वायु प्रेरना शक्ति कहँ दिनमणि शक्ति प्रकास॥९॥
विदित चन्द्रमधि चन्द्रिका तारा नखत उदोति।
शक्ति जोति सब जोति मधिहिय प्रतीति असहोति॥
या प्रकार संसार सब जहँ लगि जीव जहान।
आदिशक्ति व्यापित जगत अपर वस्तु नाहि आन॥
बन्ध मुक्ति कारन परा शक्तिहि निश्चय जान।
शक्ति तत्व सूछम महा जानहि संत महान॥१२॥
भक्ति ज्ञान बैराग जे मुक्ति हेतु विख्यात।
ते सव शक्तिहि जानिये प्रगट सरूप लखात॥१३॥
सात पुरी जे मुक्तिदा काशी आदि लखाँहि।
शक्तिरूप संदेह नहि मुक्ति हेतु जग माँहि॥१४॥

गंगादिक सरिता अखिल तुलसी मुक्ति निकेतु ।
शक्तिरूप सब जानिये अधम उधारन हेतु ॥१५॥
गायत्री उपदेश लहि द्विजगन पावहि मुक्ति ।
शक्तिहि कारन मुक्ति को अपर न कोई युक्ति॥१६॥
विना दक्षिणा शक्ति के यज्ञ नहीं फल हेतु ।
शक्तिनाम केवल विदित भव सागर को सेतु ॥१७॥
नही नारि नहि पुरुषहै आदि शक्ति गुनहीन ।
नही नपुंसक कहि सकैहि कबहू ताहि प्रवीन॥१८॥
एक अचल अद्वैतहै अकथ अरूप अनूप ।
है सोई नारि पुरुष धारै विविध सरूप ॥१९॥
मन वानी बुधिते परे कैसे वरनौ ताहि ।
शक्तितत्व वरनन करत बुधिमाति अतिथाकिजाँहि॥
मुक्तिलहे संसार मैं, जेजन जेजे भाव ।
निश्चैं मन अनुमानिये, केवल शक्ति प्रभाव॥२१॥
जाहि अराधहि मुक्ति हित, चतुरानन ईशान ।
आदि शक्ति पद होहि लय, पावहि पद निर्बान २२

परिहरि तासु सरोजपद, सुखद मुक्ति दातार ।
भजहिं त्यागि ते कल्पतरु, सेवहि मनहु मदार २३
पंचाशत जे वरण हैं, सकल शास्त्र के मूल ।
महासुर सती रूपते, शक्ति तत्व अनुकूल ॥२४॥
रचित अविद्या रूप जो, अखिल प्रपंच लखात ।
मिले ब्रह्म बिद्या सकल, मोह जाल मिटिजात ॥२५॥
करे बिविध बिधि जतन के, मोह नाश नहिहोइ ।
मायेश्वरिपद भक्ति ते, सहज बिनाशै सोइ ॥२६॥
सकल अविद्या नाशिनी, विद्याअजा अरूप ।
जोगी हिय ध्यावैं सदा जासु, सरूप अनूप ॥२७॥
आत्मरूप संसार मैं, घटघट व्यापी अम्ब ।
सब जड चेतन माँहिजो, आदि जोति जगदम्ब ॥२८॥
श्रीविहीन निःश्रीकजगशक्ति विहीन अशक्त ।
निगुनशक्ति सहित सदा निर्गुनब्रह्म अव्यक्त ॥२९॥
अति रहस्य यह तत्वहै निगम, अगम को सार ।
अरथ मर्म श्रीनामको, वरनौ करहु विचार ॥३०॥

सुख जो ब्रह्मानन्द को, सो हरि रूप शकार ।
आदि जोति जो शक्तिहै, सो दीरघ ईकार॥३१॥
कालानल को बीज, सोई जानु रकार ।
ब्रह्म शक्ति ते काल वश, प्रगट होत संसार॥३२॥
ब्रह्म शक्तिमैं नाम यह, जगदंवा को जानु ।
हरि प्यारीको नाम श्रीअरथ सहितहिय आनु॥३३॥
ब्रह्मरूपिनी शक्ति जो, मुख्य तासु श्री नाम ।
नारि पुरुष द्वैभेदलहि सो, पायो परिनाम ॥३४॥
नारि महा लक्ष्मी भई, पुरुष रूप पुनि आपु ।
नारायण शिवरूप जो, बिश्व विदित परतापु॥३५॥
ब्रह्मरूपिनी शक्ति जो, एका अजा अरूप ।
उभैरूप धारि सगुन, लीला हेतु अनूप ॥३६॥
भिन्न भिन्नगुन भेदलहि, ब्रह्म विष्णु ईशान ।
वानी लछिमी गिरि सुतातासु अंश पहिचान॥३७॥
आदि शक्ति धारी बहुरि, दशविद्या को रूप ।
नानारूप प्रगट करी, लीला हेतु अनूप ॥३८॥

कमला काली षोडशी, तारा भुवना नाम ।
मातंगी वगला तथा, धूमावति अभिराम ॥३९॥
छिन्न मस्तका भैरवी, दशधा शक्ति सरूप ।
सोई लीला हेतु पुनि धारी निज पति रूप॥४०॥
श्रीकमला को पति विदित, नारायण भगवान ।
काली को पति जानिये,महा काल परमान ॥४१॥
मातु षोडशी को प्रगट पति, ललितेश्वर नाम ।
ताराको अक्षोभ्य पति,जानहु अति वलधाम॥४२॥
भुवनेश्वरि को पति, लखो भुवनेश्वर सर्वेश ।
मातंगी के पति सदा शिव, मतंग गिरिजेश॥४३॥
वगला मुखी भवानि के, पति मृत्युंजै रूप ।
धूमावति पति जानिये, भैरव काल स्वरूप॥४४॥
छिन्न मस्तका मातुके, पति विकराल कजानु ।
मातु भैरवी पति सदा,वडकेश्वर पहिचानु॥४५॥
दशहु शक्ति दश शिव सहित,भुक्तिमुक्तिकरहेतु
शक्तिभक्ति शिवके सहित,भव वारिध करसेतु ४६

जाविद्या को जौन शिव, लिखो ताहि तिहिसंग ।
सदा ध्यान पूजन उचित, जानि शक्ति को अंग ४७
दशौ महाविद्या बहुरि, लीला हेतु उदार ।
दश धारेउ संसार मैं पुरुष रूप अवतार ॥ ४८ ॥
कमला को अवतार हैं, श्री नृसिंह भगवान ।
काली को अवतार, श्री कृष्णचन्द्र को जान॥४९॥
मातु षोडशी को विदित, परशुराम अवतार ।
भुवनेशी जगदंब को, वामन हिय मैं धार॥५०॥
तारा को अवतार, श्रीरामचन्द्र रघुराज ।
मातंगी अवतार हैं, वौध सुखद शिर ताज॥५१॥
श्री वगला अवतार, शुभ प्रगट मच्छ भगवान ।
धूमावति अवतार जग कलकी रूप बखान॥५२॥
छिन्न मस्तका मातु को, है कूरम अवतार ।
मातु भैरवी को विदित, श्री वाराह उदार ॥५३॥
माया के अवतार यह, दशौ बखानत वेद ।
आदि शक्ति अवतार लै, हरति सुरन को खेद॥५४॥

जग मैं जे अवतार है, सहित रूप साकार ।
ते सबके बल जानिये, माया शक्ति विकार ॥५५॥
देवासुर संग्राम पुनि, वृत्रासुर वध आदि ।
लीला माया की सकल, अपर कथा सब वादि॥५६॥
हरिहरादि के विविध विधि, जे नाना अवतार ।
आदि शक्ति के चरित, सब निश्चय मन में धार ।५७।
गो गोचर जो जगत में, जहँ लगि मन बुधि दौर ॥
तहँ लगि सब माया लखहु, प्रगट वस्तु नहि और।५८।
ब्रह्म शुद्ध अद्वै अचल, जासु शक्ति अस्थान ॥
तासु अधार सदा रहति, माया प्रकृति प्रधान॥५९॥
देह माँहि जिमि प्राण है, रवि के माँहि प्रकास ।
निगुन ब्रह्म में है, तथा निगुना शक्ति निवास॥६०॥
जथा चन्द्र में चन्द्रिका दाह अनल के माँहि ।
तथा ब्रह्म मैं जानिये, माया शक्ति सदाहि॥६१॥
जथा जीव विनुदेह है, मृतक अशक्त विभात ।
तथा शक्ति विनु शिव सदा, जड़के सदृश लखात।
सकल प्रतिष्ठा ईशता, जासु शक्ति आधीन ।

विधि हरिहर रजसम लखहु, निज निज शक्तिविही
महतु बडाई जगत की. जानु शक्ति अनुसार ।
जेती जामै शक्ति है, तेती महतु बिचार ॥६४॥
शक्ति प्रताप प्रगट सदा को, करि सकै बखान ।
शक्ति हीन पावै नही, काहू पै सनमान ॥६५॥
शक्ति रचति जगको. सदा पालति शक्तिहि ताहि ।
नाशति पुनि सोई सकल, महा प्रलय के माँहि।६६।
मूल प्रकृतिको चरित, सब यामै संशय नाहि ।
निमित मात्र विधि ईश, हरि उत्पति तिथि लयम ॥
विदित तीनिगुन प्रकृतिके, सतरज तम भवपाश ।
तेलहि विधि हरिहर करहि, उतपति पालन नाश ॥
ब्रह्मादिकसुर चर अचर, जहँ लगि जीव जहान ।
त्रिगुन फासमै सब फँसेउ, वेद पुरान बखान ॥६९॥
जासु शक्ति लवलेशते, शक्तिमान सब होइ ।
आदि शक्ति पर मात्मिका, जलधि किशोरी सोइ ॥
ऐसी श्री जगदंबिका, जासु अनन्त प्रताप ।
ताहि भजे विनु नहि मिटै, कलिमल कलुष कलाप॥

बन्ध मुक्ति उद्धार गति, प्रकृति काज एलेखु ।
ब्रह्म अगुन अक्री सदा, अलख वेद कह देखु॥७२॥
प्रकृति बिलास लखात जग, केवल मायारूप ।
जथा रज्जु तम ब्याज लहि, दरशत नाग सरूप ॥
अस विचारि संसार महँ, जे जे चरित लखात ।
मुख्य चरित जगदंब को, सो सब जानहु तात ॥७४॥
जदपि जगत कारिनि, प्रकृति नहि आतम सो भेद ।
विद्याज्ञान प्रकाश करि, हरति अविद्या खेद ॥७५॥
जो विद्या शक्ती परा, परमातम सो जानु ।
शक्ति भिन्न नहि ब्रह्मते, वेद पुरान बखानु॥७६॥
विद्या रूप बिसारि वो, परम अविद्या मूल ।
विद्या शक्ति भजे सदा, न शत त्रिविधि भवशूल।७७।
जैसे जीव विहीन तन, कौडीहू को नाहि ।
तैसे शक्ति विहीन, सुर असुर समस्त लखाँहि।७८।
जीवन हित जिमि मीन को, केवल जल अवलंब ।
प्राण धार प्रपंच को, तैसे श्री जगदंब ॥७९॥
शक्ति हीन शिवशव, विदित सकल शास्त्रके माँहि ।

अपर जीव जो शक्ति बिनु, कौने लेखे माँहि ॥८०॥
मुकुता मिलै न सिन्धु बिनु, कूप सरोवर माँहि ।
मुक्ति जलधि तनया बिना, मिलै अपर कहुं नाहि ॥
चंद सहोदरि के भजे, भव को ताप नसाइ ।
जैसे गंग तरंग ते, पातक जाँहि बिलाइ ॥८२॥
लहे कल्पतरु के जथा, दीन रहै नाहि कोय ।
भजे रमापद पदुमके निति, सुख संपति होय॥८३॥
खान पान रस भोग सब, जानहि सूकर स्वांन।
मानुष तनको फल यही, लहहु शक्ति विज्ञान॥८४॥
काशी या संसार मै, दुर्लभ मानुष देह ।
ताहि लहे कीजै अवसि, श्रीपद माँहि सनेह ॥८५॥
भजिये त्रिभुवन मातु को कीजै नाहि बिलंब ।
काटै को भवफाँस को, बिनु कमला जगदंब ॥८६॥
जग महँ वाल अजान को, पालति के बलमाय।
अस बिचारि आनहि भजे को जगदंब बिहाय॥८७॥
परिहरि सिन्धु किशोरि पद, नहि पूरै मन आस।
बिनु सुर सरिता, किमि नसै चाटें ओस पियास॥८८॥
शशि सो दरिमुख चन्द्रलखि, चित चकोर हरखात

पावत परमानन्द को, सब दुख ताप नसात॥८९॥
मन कमला पद कमल, माधि चंचरीक जब होय।
लहै परम विज्ञान मधु, सब दुख डारै खोय॥९०॥
विश्वमातु हरि घरनि को, सब जन पुत्र समान।
कोऊ पुत्र सुपुत्र पुनि, अपर कुपुत्रहि जान॥९१॥
सो सुपुत्र संसार महँ, जिनहि विमल विज्ञान।
पुनि कुपुत्र ते प्रगट जग, पापी अधम अजान॥९२॥
तासु कुपुत्र अजान की गति, केवल जगदंब।
मातु दयाविनु नाहि तिनहि, अपर कहूँ अवलंब॥९३॥
सहति कुचाल कुपुत्र कर, सब विधि केवल माय।
छमाधारि राखै दया, पालति छीर पियाय॥९४॥
ऐसी जग जननी, रमा सिंधु किशोरि विहाइ।
भजहि अपर सुख हेतु, ते नर रहे भुलाइ॥९५॥
कबहुँ कुमाता होति नाहि, होहि कुपुत्र अनेक।
राखति दया कुपुत्रपै अधिक जानि अविवेक॥९६॥
कलिकलमष तम नाशकर भजहु रमापद भानु।
हित जगदंबा के विना और न काहू जानु॥९७॥
कमला बदन सरोज छवि, मोमन मधुप समान।

करिहै कवहिय सरविमल मधुर माधुरी पान॥१८॥
कवधों लखि घन श्याम, छवि रमा दामिनी संग।
प्रमुदितह्वैहै मोर मन गहि हिय परम उमंग॥११॥
हृदय सरोवर माँहि कव, प्रीति वसंतहि पाइ।
श्रीपद पंकज फूलिहै, जाते सुख सर साइ॥१००॥
हरि प्यारी छवि भानु, कवहिय अकाशके माँहि।
उहित होयगो जासु दुति, पातक पुंज न साँहि॥१०१
एक भरोसो मोहि पुनि, एक आश विस्वास।
परि हरि सब सुरको, भयों एक रमाको दास॥१०२॥
चात्रिक की गहिरहनिको, तजि सर सागर कूप।
काशी चात्रिक निति भजत रमास्वाति घन रूप।१०३
छीर समुद्र किशोरि छवि,स्वाती जल दसमान।
चित चात्रिक जाचत सदा, त्यागि सबै जल आन॥
जैसे चात्रिक स्वाति विनु, पियत वारि नहि अन्य।
तैसे श्रीपद कमल मै, धारिये प्रीति अनन्य॥१०५।
स्वातिहिते चातक करत, दिन दिन सहज सनेह।
मुरन चातक साहसी, पाहन वरसे मेह॥१०६॥
प्रीति रीतिवर सीखिये, चतुर चातकै पांहि।

स्वाति हेतु दुख को सहत, पियत आन जल नाँहि।
तैसी भक्ति अनन्य को, रीति समुझि मन माँहि।
बुध जन मन वच काय सो देवी भजहिं सहाहि॥
रटौ नाम जगदंब को, गावहु शक्ति चरित्र।
जग मैं शक्ति समान तब, दूजो अहे न मित्र॥१०९॥
सेवति निजपति को सदा जिमि पतिवर्ता वाम।
तैसे जगदंबा भजहु औरन सो नहि काम॥११०।
तारी अधम अनेक को अमनहि कबहुँ तोहि
जानि परैगो हरिप्रिया, जब तारैगी मोहि॥१११॥
जैसी है खलतारिनी, छीर समुद्र कुमारि।
ते सोई खल अधम मैं, हियमै समुझ बिचारि।११२।
जेते जगमै पातकी कुमति कुचाल अपार।
साधन हीन मलीन मन, मैं तिनमह सरदार ११३
जदपि अहौं सदगुन रहित, तदपि नहि अपसोस।
अवसि दया करिहै रमा, जाको मोहि भरोस॥११४॥
जौ नहि त्यागै सिन्धु,-जा पतित उधार-नि वान।
मैं नहि तजौ कुचाल, निज कछुक नया मै हानि ११५
अधम नहो जग मोहि, सम तदपिहिये परतीति।

अवसि तारिहैं इंदिरा समुझि आपनी रीति ॥११६॥
जदपि सकल गुनहीन हौं, रटउँ रमा को नाम ।
हरि प्यारी के दाश को, सिद्ध होंहि सब काम ११७
सब घट व्यापी जगत महँ, आदि शक्ति जगमातु ।
दृष्टि दोष दरशै नही, ज्ञानदृष्टि दरसात ॥११८॥
जल बियोग नहि सहि सकहि बुद्धीहीन जे मीन ।
नर चेतन कैसे जियै, अति मध्यान बिहीन ॥११६॥
आत्मरूपिनी जलधिजा कमला त्रिभुवन मातु ।
सुमिरि ग्रंथ पूरन करेउ, जासु चरित विख्यातु।१२०।
बिरंची भक्ति तरंगिनी दोहा इक शत बीश ।
जन काशी परसाद यह, सुमिरि रमा जगदीस १२१
जगदेवा पद प्रीति हित, सरिता अति कमनीय ।
यामे जो मज्जन करै, होइ भक्त गननीय॥१२२॥
अरथ सुधाके पान ते, नाशै मनको ताप ।
लहै परम आनन्द को, मेटै पाप कलाप॥१२३।

इति श्रीदेवा भक्ति तरंगिनि समाप्तम् ॥

आधिक आश्विन कृष्ण अमावस्यायां रवि वासरे सम्वत् १९१७

* श्रीगणेशायनमः *

श्रीहरिवल्लभायैनमः ॥

अथ महालक्ष्म्यानवरत्नंलिख्यते ।

यामायापरमाचशाभयकरा याविष्णुवक्षस्थिता याब्रह्मादिसमस्तदेवनमिता याश्वेतपद्मासना यासृष्टिस्थितिनाशकारणपराविद्याजगत्तारिणी पायात्साहरिवल्लभा भगवतीवैकुंठधामेश्वरी ॥ १ ॥ याश्रीक्षीरसमुद्रराजतनयानारायणप्रेयसी यायोगीन्द्रसुरेन्द्रसेव्यचरणासौवर्णवर्णाचया यामहिषासुरमर्दिनीगिरिसुतावाग्देवताशांकरी पायात्साहरिवल्लभाभगवतीवैकुंठधामेश्वरी ॥ २ ॥ या पद्मा परदेवता जलधि जा पद्मालया पद्मिनी पद्माक्षी पयसिन्धुजाचविमला श्रीपद्मनाभप्रिया याश्शरणागतवत्सलाकलिमलप्रध्वंसिनीचिन्दिरा पायात्साहरिवल्लभाभगवतीवैकुंठधामेश्वरी ॥ ३ ॥ यामाताकमलोद्भवस्यजननी यासिद्धिलक्ष्मीस्मृता याब्रह्मा-

च्युतशंकरादिविबुधैः संसेव्यमानापरा यात्रिद्यादश-
धाधृतानिजवपुलीलार्थविश्वोदरे पायात्साहरिवल्ल-
भाभगवतीवैकुंठधामेश्वरी ॥४॥ याकालीत्रिपुराभि-
धाचकमलायाछिन्नमस्ताशिवा यातारावगलामुखी
चभुवनायाभैरवीरूपिणी याधूमावतिदेविधूम्रवर्णा
मातंगकन्याचया पायात्साहरिवल्लभाभगवतीवैकुं-
धामेश्वरी ॥ ५ ॥ यामंडासुरनाशिनी जलधिजा-
शुभादिसंघातिनी यादुर्गासुरभंजनीसुरनुता शा-
कंभरीभ्रामरी या चंडीकैटभमोहिनीसुरहिता धूम्रेक्ष-
णोत्पाटिनी पायात्साहरिवल्लभाभगवतीवैकुंठधामे-
श्वरी ॥ ६ ॥ यासीतादशमौलिदर्पदलिनीरामप्रि-
याभूमिजा यात्रैलोक्यकुटुंबिनीसरसिजा यासि-
न्धुकन्यारमा या भृगुनंदिनी सिद्धिदा धरणिजा या-
रुक्मिणीराधिका पायात्साहरिवल्लभाभगवतीवैकुंठ-
धामेश्वरी ॥ ७ ॥ याशक्तिप्रकटीकरोतिभुवनंयापा-
तिविश्वंसदा यासंहारकरीसमस्तजगतां याब्रह्मवि-

द्यास्मृता आद्याज्योतिनमापद्दापरतरा याब्रह्मरूपा-
शिवा पायात्साहरिवल्लभाभगवतीवैकुंठधामेश्वरी
॥ ८ ॥ यास्वाहासुरतृप्तिदाचविदितायज्ञेचयादक्षि-
णा या श्री तुष्टि च पुष्टि ऋद्धिनित्यशांतिश्च
शांतिश्च यापितृणांवरतृप्तिकारणस्वधायाकाशिका-
मुक्तिदा पायात्साहरिवल्लभाभगवतीवैकुंठधामेश्वरी
॥ ९ ॥ नवरत्नंमहालक्ष्म्यानित्यंयेहिपठन्नरः प्रा-
प्नोतिविपुलान्कामान्महामायाप्रसादतः ॥

इति श्रीमहालक्ष्मीनवरत्नं समाप्तम् ॥
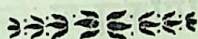
* श्रीगणेशायनमः *

नमस्तेरमेसिन्धुकन्येनमस्ते जगत्तारिणीश्रामरीत्राहिमातः नमस्तेशिवेसच्चिदानन्दरूपेनमस्तेजगद्व्यापिणीत्राहिपद्मे ॥ १ ॥ नमोसुन्दरीक्लेशनाशायप्रौढे नमोतत्वहेमप्रभेरत्नगर्भे नमोविश्वमातर्महाविष्णुजाये नमस्तेजगत्पालिनीत्राहिपद्मे ॥ २ ॥ नमस्तेजगन्मोहिनीस्वर्गदात्रि नमस्तेमहैश्वर्जदेकामधेनु नमश्चार्थसिद्धिप्रदेमुक्तिहेतुः नमस्तेजगत्तारिणित्राहिपद्मे ॥ ३ ॥ नमस्तेशरण्येपपरब्रह्मरूपेअरूपेप्रपंचस्वरूपेप्यनूपे नमोनिर्गुणेविश्वबीजेनिरीहे नमस्तेभवोद्धारिणित्राहिपद्मे ॥ ४ ॥ नमस्तेसदाविष्णुवामांकसंस्थे नमस्तेवराभीतिहस्तेहृदिस्थे सरोजासनेपद्महस्तेप्रसस्ते नमस्तेमनोहारिणीत्राहिपद्मे ॥ ५ ॥

इति श्रीकमलापंचरत्न समाप्तः ॥